नया-सृजन

विभागीय पत्रिका (वार्षिक)

दूसरा अंक, संख्या सितंबर, 2022

अब्दुल हन्नान अहमद विशेषांक

संपादक : डॉ. जाकिर हुसैन

सह-संपादक : डॉ. नवकांत शर्मा

हिंदी विभाग

कन्या महाविद्यालय, गीतानगर
गुवाहाटी- 781021 (असम)

शुभ-संदेश

हिंदी विभाग, कन्या महाविद्यालय की ओर से **नया-सृजन** नामक विभागीय पत्रिका (वार्षिक) का दूसरा अंक प्रकाशित होने जा रही है। असम जैसे हिंदीतर क्षेत्र में महाविद्यालय स्तर पर हिंदी में पठन-पाठन होना भी अपने आप में महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस दृष्टि से हिंदी विभाग की ओर से एक पत्रिका का प्रकाशन होना स्तुत्य कार्य है। इस पत्रिका के जरिए अध्ययनरत विद्यार्थियों को भी साहित्य चर्चा तथा सृजनात्मक कार्य का सुनहरा अवसर प्राप्त होगा।

हिंदी विभाग, कन्या महाविद्यालय के इस सृजनात्मक कार्य को सम्मान देते हुए संपादन समिति को तहे दिल से साधुवाद देता हूं तथा इस विभागीय पत्रिका का उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करता हूं।

जय हिंद
जय हिंदी
जय हिंदी विभाग
जय कन्या महाविद्यालय

(डॉ. सत्यजित कलिता)
अध्यक्ष
कन्या महाविद्यालय
गीतानगर, गुवाहाटी-21

संपादक की कलम से

इस अखिल ब्रह्मांड के हरेक सृजन अपने आप में अनोखा होता है। प्रकृति की हरेक रचना मंगलमय होता है। तभी तो यह संसार निरंतर रुप में गतिमान हैं।

हिन्दी एक विशाल समुद्र है जहां अनगिनत नदियों के जलस्रोत समाहित हो जाते हैं। जाति, धर्म, भाषा, प्रांत आदि बिन्दुओं से ऊपर उठकर हिन्दी साहित्य ने सदैव महामानवता का जय गान गाया है। राष्ट्रीय एकता को जगाने और मजबूत करने में भी हिंदी का अवदान सर्वजन विदित है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी अनेकता में एकता लाने में हिंदी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज हिंदी देश का स्वाभिमान और पहचान भी है।

असम तथा पूर्वोत्तर भारत के अग्रणी नारी उच्च शिक्षानुष्ठान कन्या महाविद्यालय का एक महत्वपूर्ण अंग है हिन्दी विभाग। वर्ष 1989 में स्थापित हिन्दी विभाग अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए आज की स्थिति तक पहुचे हैं। इस संघर्षमय सफर में अनेक विद्वतजनों का स्नेह

और आशीर्वाद भी विभाग को मिलता रहा। हम उन सभी महानुभावों को सादर स्मरण करते हैं।

हिन्दी विभाग, कन्या महाविद्यालय ने हिन्दी साहित्य सेवा के उद्देश्य से "नया-सृजन" नामक विभागीय पत्रिका प्रकाशित करने की योजना बनाई थी। यह नया-सृजन का दूसरा अंक है। इस विभागीय पत्रिका के जरिए हिन्दी के विद्यार्थियों को सृजनात्मक कार्य के प्रति आकर्षित करना, सही दिशा दिखाना, हिन्दी प्रेम जगाना और भविष्य के लिए प्रेरणा देना प्रमुख लक्ष्य है।

प्रस्तुत अंक में हिंदी विभाग के दिवंगत युवा विभागाध्यक्ष, परम मित्र अब्दुल हन्नान अहमद को सश्रद्ध स्मरण किया गया है। यह अंक आब्दुल हन्नान अहमद को सादर समर्पित है।

डॉ. जाकिर हुसैन
संपादक

आभार

नया-सृजन का प्रथम अंक वर्ष 2014 में प्रकाशित हुआ था। उस समय अब्दुल हन्नान अहमद जी विभागाध्यक्ष थे। उन्हीं के नेतृत्व में ही नया-सृजन का बीजारोपन हुआ था। अब वे हमारे बीच नहीं हैं। सबसे पहले हम उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

नया-सृजन को प्रकाशित करने में महाविद्यालय के माननीय अध्यक्ष, विशिष्ट साहित्यकार, हिन्दी प्रेमी डॉ. सत्यजित

कलिता जी का भी मार्गदर्शन हमें नसीब हुआ। महोदय के प्रति भी सादर धन्यवाद प्रकट करते हैं।

हमारे विभाग के अतिथि अध्यापक, विशिष्ट कवि, समर्पित हिन्दी प्रेमी प्रो. रफिकुल हक जी को भी उनके निरंतर सहयोग और प्रोत्साहन के लिए धन्यवाद देते हैं। कन्या महाविद्यालय के सभी शिक्षक कर्मचारीगण तथा विद्यार्थियों के प्रति भी हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

अंत में नया सृजन में साहित्यिक लेख, कविता आदि देकर हमें सहयोग करनेवाले नन्हें साहित्यकार/विद्यार्थियों के प्रति भी तहे दिल से शुक्रिया अदा करते हैं जिनकी रचनाओं के बिना इस पत्रिका का प्रकाशन असंभव हो जाता।

डॉ. जाकिर हुसैन

संपादक

अनुक्रमणिका

शुभ-संदेश/ डॉ. सत्यजित कलिता//02

संपादक की कलम से//03

आभार//04

मन के हारे हार है मन के जीते जीत/डॉ. जाकिर हुसैन//6

अब्दुल हन्नान अहमद: करुण स्मृति की बूंद/डॉ. नवकांत शर्मा//38

गुरुवर अब्दुल हन्नान अहमद/धृतिस्मिता दास//46

भारत की राष्ट्रभाषा: समस्याएं एवं समाधान/अब्दुल हान्नान अहमद//50

विश्व पंचायत में हिन्दी की गूंज (न्यूयार्क की यात्रा)/प्रो. रफिकुल हक//55

शिक्षक दिवस/शोभा कुमारी यादव//70

शिक्षक दिवस/प्रिती कुमार राय//73

शिक्षक दिवस/निशारून खातुन//76

शिक्षक दिवस/कोमल कुमारी ठाकुर//77

शिक्षक दिवस (भाषण)/पूजा वर्मन//78

शिक्षक दिवस/पिंकी कुमारी//79

हिंदी दिवस (निबंध)/खुशबूकुमारी पोद्दार//80

हिंदी दिवस/आरती कुमारी//83

फिलहाल तो कोशिश अभी जारी है/सोनी कुमारी//84

प्रदूषण/कामेश्वरी दे//85

शिक्षा/बिनिता कुमारी//88

धूम्रपान के खतरे/वरषा शर्मा//90

नेताजी सुभाष चंद्र बोस/प्रिया चौधरी//92

किसानों का अवदान/जयमाली बसुमतारी//95

पर्यावरण/अंजलि कुमारी//96

फोटो गैलरी//97

अब्दुल हन्नान अहमद विशेष

मन के हारे हार है मन के जीते जीत

डॉ. जाकिर हुसैन

प्रस्तावना

किसी जीवात्मा के जीवन के अंत को मृत्यु कहते हैं। मृत्यु सामान्यतः वृद्धावस्था, लोभ मोह, रोग, कुपोषण आदि के कारण होती हैं। माना जाता है कि मृत्यु के 101 स्वरूप होते हैं। लेकिन इसका मुख्य स्वरूप 8 प्रकार होती हैं। जिसमे बुढ़ापा, रोग, दुर्घटना अकस्मिक आघात, शोक, चिंता और लालच शामिल है सामान्यत: मृत्यु एक डरावना शब्द है। जिसे सुनते ही कुछ लोग डर के मारे सहम जाते हैं तो कुछ लोग हंसने लगते हैं। मृत्यु के बारे में सुनकर जवान लोग हंसते लगते हैं क्योंकि अभी उनके आखों में

लेखकीय संक्षिप्ति०

नाम: डॉ. जाकिर हुसैन

शिक्षा: एम.ए. एम.फिल, पीएच-डी, पीजीडीसी (एक वर्षीय हिंदी अनुवाद डिप्लोमा)

एम.फिल का विषय: अज्ञेय की कविताओं 'सागर'

पीएच.डी का विषय: भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और असमिया पत्रकारिता के सरोकार

वर्तमान पेशा: सहायक अध्यापक & विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, कन्या महाविद्यालय, गीतानगर, गुवाहाटी- 781021

उपलब्धियां :

(1) **लघु शोध परियोजना** (MRP), विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC), उच्चतर शिक्षा विभाग, भारत सरकार।

विषय: बरपेटीया लोक-संस्कृति: एक गवेषणात्मक अध्यायन

(2) **वरिष्ठ फैलोशिप** (SF), सीसीआरटी (CCRT), संस्कृति मंत्रालय के तत्वावधान में भारत सरकार के अधीन।

विषय: सूर-साहित्य में लोक-समाज और संस्कृति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रकाशित ग्रंथ: भारतीय संस्कृति में असम की बरपेटीया लोक-संस्कृति: एक अध्ययन

शीघ्र प्रकाशन:

- मां का इतिहास (कविता संग्रह)
- हिंदी की आत्मकथा (कविता संग्रह)

हजारों सपने हैं, वे सोचते है मृत्यु उनसे कोसों मील दूरी पर है। जबकि बुढ़े लोग मृत्यु शब्द से सहम जाते हैं क्योंकि वे जिंदगी का अधिक समय बीता चुके होते हैं। बुढ़ापा उनकी जिंदगी का आखरी पड़ाव है। फिर भी इस दुनिया का मोह वे छोड़ना नहीं चाहते। परंतु मृत्यु निश्चित है, यह सोचकर वे मृत्यु का क्षण गिणते रहते हैं। न जाने कब उनका बुलावा आ जाए! बुढ़ापे में आई मृत्यु को प्राकृतिक मृत्यु कहा जाता है।

कभी-अभी अनिच्छित और अनिश्चित मृत्यु हमारे द्वार पर यमराज बनकर खड़ी रहती है, हमें पता ही नहीं चलता। लोग अपने पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, भाई-बहनों, रिश्तेदारों को लेकर सुनहरे सपनों में खोए रहते हैं। लेकिन इसी दौरान अचानक किसी दुर्घटना से हो या किसी शारीरिक अस्वस्थ्यता के कारण उन्हें हमेशा के लिए यह दुनिया छोड़कर जाना पड़ता है। इस तरह की मृत्यु को अकाल मृत्यु कहा जाता है।

कभी-कभी नियती बहुत निष्ठुर हो जाती है। हम तो मामुली इंसान है, नियंत्रणकर्ता तो परम ईश्वर है !

यहां अब्दुल हन्नान अहमद जी के प्रसंग में चर्चा की जा रही है। उनकी उम्र लगभग 40 साल के आस-पास ही था। अपने हसीन सपनों को साकार करने के लिए वे दिन-रात मेहनत करते थे। मात्र कुछ वर्षों तक नौकरी करने के पश्चात वे रोगग्रस्त हो गए। दिन व दिन उनका स्वास्थ्य बिगड़ता गया। अपने इलाज में कोई कमी न रखने के बावजूद भी वे पुन: स्वस्थ्य नहीं हो पाए। फलतः एकदिन अचानक हमें हमेशा के लिए छोड़कर इस दुनिया से चले गए। दृढ़ आत्मविश्वास, असीम साहस और प्रबल ईच्छा शक्ति के बावजूद भी अपनी जिंदगी से उन्हें हार मानना पड़ा। अब्दुल हन्नान अहमद जी की मृत्यु की खबर हमारे लिए अति हृदय विदारक थी। यह हिंदी विभाग, कन्या महाविद्यालय के लिए एक अपूरणीय क्षति है, जिसकी भरपाई कभी नहीं हो सकता। इसी के साथ एक हंसता-मुस्कुराता, खिलखिलाता हुआ चेहरा अनंत गगन में विलीन हो गया।

जन्म

सन 31 दिसंबर, 1979 को बरपेटा जिले के अंतर्गत खोलाबांदा गावं में एक प्रतिष्ठित एवं सुसंपन्न परिवार में अब्दुल हन्नान अहमद जी का जन्म हुआ था।

परिवार

हन्नान जी के पिता का नाम गियास उद्दीन अहमद तथा माता का नाम हासना भानु है। उनके परिवार में दो भाई और तीन बहनें हैं। भाईयों में हन्नान जी सबसे बड़े और छोटे लुथफर रहमान है। बहनों में सबसे बड़ी नीलिमा अहमद, मझली मरमी अहमद तथा छोटी रुहाना अहमद है। बड़ा बेटा होने के नाते उन्हें बहुत लाड़-प्यार मिलता था। उनके पिता पेशे से एक स्कूल में हिंदी शिक्षक थे। इसी कारण हन्नान जी ने भी हिंदी विषय को अपने अध्ययन का लक्ष्य बना लिया। हन्नान जी के पिता उन्हें हिंदी पढ़ने के लिए उत्साह देते थे। इसी उत्साह के साथ वे निरंतर अच्छे रिजल्ट के साथ उत्तीर्ण होते गए। आखिर में उन्होंने हिंदी विषय में स्नातोकोत्तर संपूर्ण करके हिंदी विभाग के एक अच्छे अध्यापक बन गए।

विवाह

03 अक्टुबर, 2009 को अब्दुल हन्नान अहमद जी का विवाह अकबर अली अहमद जी की कन्या आंजुवारा बेगम के साथ हो गई।

संतान

हन्नान जी की दो बेटियां हैं। बड़ी बेटी का नाम हृदया अहमद (जन्म 08-08-2011) और छोटी बेटी का नाम माहीन अहमद (जन्म 14-10-2015) हैं। दोनों बेटियां गुवाहाटी के हातीगांव स्थित लिटिल फ्लावार स्कूल में अध्ययनरत हैं।

शिक्षा

अब्दुल हन्नान जी की प्रारंभिक शिक्षा उनके माता-पिता के तत्वावधान में शुरू हुई थी। अपने गावं के एक असमिया माध्यम के विद्यालय से उन्होंने अपनी पढ़ाई शुरू की थी। वर्ष 1997 में अपने गांव के खोलाबांदा हाईस्कूल से दसवीं (HSLC) की परीक्षा उत्तीर्ण हो गए। उसके बाद बरपेटा जिले के अंतर्गत मध्यकामरूप महाविद्यालय, सोभा से सन 1999 में बारहवीं (HS) की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। फिर उसी महाविद्यालय में स्नातक (B.A) डिग्री के लिए दाखिला ले लिया। सन 2002 में उन्होंने हिंदी को मुख्य विषय के रूप में लेकर स्नातक की शिक्षा

संपूर्ण कर ली। इसके बाद वर्ष 2002 में हन्नान जी स्नातकोत्तर (M.A) डिग्री के लिए के लिए पूर्वोत्तर हिल्स विश्विविद्यालय, शिलांग में दाखिला ले लिया। वर्ष 2005 में स्नातकोत्तर परीक्षा में वे प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। इसके बाद उन्होंने कन्या महाविद्यालय में अध्यापना कार्य करते हुए वर्ष 2008 में मदुराई कामराज विश्वविद्यालय, दक्षिणी तमिलनाड़, भारत से एम.फिल की डिग्री हासिल कर ली थी।

व्यक्तित्व

हन्नान जी की सोच बहुत ही सकारात्मक थी। उनके विचार सुलझे हुए थे और उनका मन बहुत साफ था। वे बेहत ही खुशमिजाज इंसान थे। बात-बात में मजाक करना उनकी आदत थी। वे अपने आस-पास के वातावरण को प्रफुल्लित रखते थे। वे एक शक्तिशाली, सरल और ऊर्जावान व्यक्ति थे। इसलिए लोग उनकी तरफ अनायास आकर्षित हो जाते थे। कहा जाता है कि- "जिसका व्यवहार, बोल-चाल, स्वभाव अच्छा हैं और जो एक आकर्षक, खूबसूरत, सकारात्मक सोच रखता हो तो सभी उसकी तरफ खिंचे चले आते हैं। लोग उनसे बात करने में दिलचस्पी दिखाते हैं। एक अच्छे इंसान की खूबसूरती उसका व्यक्तित्व होता

है, जिसकी चमक कभी फीकी नहीं पड़ती।" हन्नान जी ऐसे ही व्यक्तित्व के अधिकारी थे।

वे बड़े ही उत्साह से अपने जीवन के कर्म पथ पर आगे बढ़ रहे थे। उनको मालूम था कि कर्म ही जीवन है कर्म के बिना जीवन नहीं है। यानी कि जिस दिन कर्म नहीं रहेगा उसी दिन जीवन भी खत्म हो जाएगा। इस सिद्धांत को सामने रखकर उन्होंने बड़ी हिम्मत से एक अप्रादेशीकृत महाविद्यालय में अवैतनिक हिंदी अध्यापक के रूप में अपना कर्म-जीवन आरंभ किया था। बिना वेतन के कर्म-जीवन में असीम त्याग और साहसी होना जरूरी है। क्योंकि जिंदगी के चुनौतियों को स्वीकार करके आगे बढ़ना पड़ता है। कहा जाता है कि जितनी बड़ी चुनौती उतनी बड़ी सफलता। जो भी हो उन्होंने सात वर्षों तक बिना वेतन के कन्या महाविद्यालय में अध्यापन किया। उनके जीवन में अनेक कठिन परिस्थितियां आई, जिसका उन्होंने डटकर सामना किया। कभी बहुत दुखी हो जाते थे और कहते थे, जाकिर भाई कब तक ऐसा चलता रहेगा ! जीवन निर्वाह करना बहुत ही कठिन होता जा रहा है ! मैं हमेशा उन्हें एक छोटे भाई की तरह समझाता था और वह आसानी से मेरी बातों को समझ जाता था। उनकी कठिन साधना और लगन ने आखिर उन्हें अपनी मंजिल तक पहुंचा ही

दिया। वर्ष 2013 में कन्या महाविद्यालय प्रादेशीकृत हो गया और उनकी नौकरी नियमित हो गई।

वे खाने के बड़े शौकीन थे। कोई भी खाना मजे से खाते थे। मैं, खाने में पहले से ही थोड़ा कमजोर हूं। खाने में उनका मुकाबला न कर पाने के कारण वह हमेशा मुझे मजाक से कहते थे जाकिर भाई आप ज्यादा दिन नहीं बचेंगे। हन्नान जी खाने में कोई हिचकिचाहट नहीं करते थे, तुरंत बड़े शौक से खा लेते थे। उनके खाने की रूची देखकर मुझे बेहत खुशी होती थी।

खाने के प्रति रूचि देखकर मैं उनको अपने गांव लेकर गया था। उन दिनों (मध्यकामरूप कॉलेज में पढ़ाई के दौरान) मेरे पास बीएससी की एक साईकिल थी। सुबह-सुबह नहा-धोकर हम दोनों साईकिल से गांव के लिए निकल जाते थे। उन्हें मेरी मां स्वादिष्ट पकवान बनाकर खिलाती थी। वे मछली पकड़ने में भी बहुत रूचि रखते थे। हमारे तालाब से वे ढेर सारी मछलियां पकड़ कर लाते थे। मछली पकड़ने के लिए वे हमारे गांव कई बार गए थे। हम दो-चार दिन मेरे घर पर ठहरकर फिर वापस लॉज पर आ जाते थे।

जब भी वे अपने गांव जाते थे तो वहां से वापस आकर मुझे मछलियां पकड़ने की कहानियां ही ज्यादा सुनाते थे। बोलते थे कि इसबार घर जाते ही जाल लेकर नदी में गया और ढेर सारी मछलियां पकड़ कर लाया और स्वादिष्ट-स्वादिष्ट व्यंजन से खाना खाया। इसलिए वे अपनी नौकरी भी गांव ट्रांसफार करना चाहते थे। कहते थे कि गांव जाकर खेती-बाड़ी करेंगे, नदी में मछली पकड़ेंगे और अपने ही घर की सब्जियों से विभिन्न स्वादिष्ट व्यंजन बनाएंगे और मजे से अपनी जिदंगी जिएंगे।

मृत्यु

2018 के अंतिम भाग से हन्नान जी अस्वस्थ्य रहने लगे। शुरू में उन्हें अर्श की शिकायत हई थी। दिन व दिन उनकी तकलीफ बड़ती चली गई। कभी-कभी उनकी हालत इतनी गंभीर हो जाती थी कि ऑस्पताल में भर्ती करना पड़ता था। एकदिन फेसबुक में उन्हें ऑस्पताल के बेड पर लेटी हुई फोटो साझा करते देख मैंने तुरंत फोन लगाया तो पता चला तबियत बिगड़ने के कारण ऑस्पताल में भर्ती होना पड़ा। फिर मैं और मेरी पत्नी तुरंत उनसे मिलने चले गए।

अर्श रोग की तकलीफ बढ़ने के कारण अत्यधिक रक्तक्षरण हो रहा था। हन्नान जी दर्द से कराह रहे थे। वे बड़े कमजोर दिख रहे थे। उदासी से कह रहे थे यह बीमार तो कम होने का नाम ही नहीं ले रहा है ! डक्टरों के दवाईयों से भी कुछ आराम नहीं मिल रहा है ! हन्नान जी के घरवाले काफी परेशान दिख रहे थे।

एकबार गुवाहाटी के अपोलो ऑस्पताल में उनकी तबीयत की जांच की गई। जांच के दौरान पता चला कि उनका लीवर कमजोर हो गया है। यह पता चलने के बाद हन्नान जी और निराश हो गए। उन्होंने अपने इलाज में कोई कमी नहीं रखी थी। कॉलेज में उनसे मुलाकात होती थी तो हमेशा उनका हालचाल पूछता लेता था। जबाव में कभी आराम मिला, कभी नहीं मिला, कभी बीमार बड़ गया है सुनने को मिलता था। गुवाहाटी में चल रहे चिकित्सा से कुछ आराम न मिलने पर और बेहतर चिकित्सा के लिए वे हैदराबाद चले गए। उस दौरान (2020) करोना की भंयकर लहर चल रही थी। वहां से वापस आने के बाद उन्होंने नई उमंग के साथ फिर से अपनी जिदंगी की शुरूवात की। नियमित दवाईयों के सेवन करने के बाद भी ज्यादा आराम नहीं मिला था। उन्हें चेकअप के लिए फिर हैदराबाद जाना था। कोरोना महामारी के कारण डोमेस्टिक फ्लाईट बंद हो गई। कईबार फ्लाईट का

टिकिट बनाने के बाद टिकिट केंसिल करना पड़ा। कोरोना के कारण कॉलेज बंद था तो हन्नान जी अपने गांव में ही रहते थे। हैदराबाद न जा पाने के कारण गुवाहाटी में ही बीच-बीच में आकर चैकअप करा लेते थे।

धीरे-धीरे उनकी बिमारी बढ़ती चली गई। उनकी तबीयत में कोई सुधार नहीं आई। धीरे-धीरे करोना की लहर कम हो गई। स्कूल-कॉलेज खुलने लगे। फिर वे गुवाहाटी आ गए और कॉलेज में अध्यापना करना शुरू कर दिया। सिर्फ एक या दो-महीने तक ही कॉलेज में वे पाठदान कर पाए। एक दिन अचानक खबर मिली कि उनकी मृत्यु हो गई। इस तरह 10 नवंबर 2020 को उनके नश्वर देह से आत्मा हमेशा के लिए चली गई।

***निम्नलिखित रूप में अब्दुल हन्नान अहमद जी के व्यक्तित्व, जीवन तथा कार्य-शैली से जुड़े कुछ विशेष पहलुओं पर सूक्ष्मता से चर्चा की गई है।**

***व्यक्तित्व निर्माण में परिवार**

एक व्यक्ति के सफलता में उनके परिवार का बहुत बड़ा योगदान रहता है। कोई व्यक्ति अकेला कुछ नहीं बन सकता। जिंदगी में आई कठिनाईयों का मुकाबला करने के लिए परिवार

का पूर्ण समर्थन या सहयोग आवश्यक होता है। हमारी सफलता के पीछे अपनों की दुआं, सहानुभूति, कृपादृष्टि तथा संवेदना रहती है। अपनों के आशीर्वाद के बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते।

हन्नान जी को अपने परिवार की तरफ से बहुत समर्थन मिला था। उनके पिता जी पेशे से एक शिक्षक थे। उस समय उनको ज्यादा वेतन भी नहीं मिलता था। फिर भी उन्होंने अपने बच्चों के परवरिश में कोई कमी नहीं रखी थी। मेरा व्यक्तिगत अनुभव यहां साझा करना चाहता हूं। जब मैं और हन्नान जी बहरी मसजिद लॉज में रहते थे तो देखता था कि हन्नान के पिता जी हप्ते में कम से कम दो बार आते थे। हन्नान जी के लिए खाना-पीना, नये नये कपड़े और पुस्तकें आदि लेकर आते थे। इसके अतिरिक्त उनके छोटे भाई, बहनें, रिस्तेदार भी कभी खाली हाथ नहीं आते थे। हन्नान के परिवार ने उनके देखभाल में कोई कमी नहीं रखी थी।

एक अप्रादेशीक कॉलेज में बिना वेतन के सात वर्षों तक तौकरी करना आसान बात नहीं थी। हन्नान जी के परिवार ने ऐसे कठिन वक्त में उन्हें काफी सहायता की थी। इस तरह उनकी आगे की जिंदगी को भी उनके परिवार ने अच्छी तरह संवारा। उनकी

दो बहनें भी गुवाहाटी में नौकरी करती है। वे सभी आस-पास के फ्लेट में एक-दूसरे के साथ बड़े प्यार से मिलजुलकर रहते थे। जरूरत होने पर एक-दूसरे की मदद करते थे। इस दृष्टि से कहा जा सकता हैं कि हन्नान जी के व्यक्तित्व निर्माण उनके परिवार की भूमिका अतुलनीय रही।

***विभागाध्यक्ष**

अब्दुल हन्नान जी की नियुक्ति 2006 में हिंदी विभाग, कन्या महाविद्यालय में सहायक अध्यापक के रूप में हुई थी। इस कॉलेज में उन्हें हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष के रूप में नियुक्ति मिली थी। इतनी कम उम्र में एक विभाग का प्रतिष्ठापक अध्यापक बन पाना बड़ी किस्मत की बात होती है। फिर भी उन्हें इस बात की तिल मात्र अभिमान न था। उन्होंने सन 2006 से 2013 तक एक अप्रादेशीकृत महाविद्यालय में बिना वेतन के पाठदान किए। सन 2013 में यह कॉलेज प्रादेशीकृत हो गया और उनको सरकार की तरफ से नियमित वेतन मिलना शुरू हो गया।

***एक आवासीय जीवन की कथा**

मेरी उनसे मुलाकात सन 1997 में बहरि मसजिद लॉज में हुई थी। तब मैं स्नातक द्वितीय वर्ष का छात्र था और आब्दुल

हन्नान जी उच्चतर माध्यमिक प्रथम वर्ष का छात्र था। पहली मुलाकात से ही उनसे मेरी आंतरिकता बढ़ गयी थी। मैं उन्हें अपने छोटे भाई जैसा ही प्यार करता था। वह भी मुझे बड़े भाई के जैसा 'दादा' कहकर पुकारता था।

हम दोनों एक ही कमरे में रहते थे। मैं साफ-सफाई पर बहुत ध्यान देता था। कपड़ों को समय पर धोना तथा उसे प्रेस करके सजाकर रखना मुझे अच्छा लगता था। टेबल को सुंदर कवर से ढक कर किताबों को सजाकर रखता था तथा दीवारों पर तरह-तरह के चित्रों से अपने कमरे को आकर्षक बना कर रखता था। इन सभी कारणों से वे मुझसे कॉफी प्रभावित होते थे। और मजाक से कभी-कभी कहते थे "जाकिर भाई आपका कमरा किसी महान व्यक्ति के गवेषणागार से कम नहीं है। आपके कमरे से किसी दूसरे के कमरे में जाने का मन ही नहीं करता।"

जिस दिन हमने बहरि मसजिद लॉज में प्रवेश किया था उसी दिन की एक घटना मुझे याद आ रही है। हम अपने-अपने सामान सजाकर सोने की तैयारी कर रहे थे। उस समय रात के 10.30 बज गए थे। चारों तरफ सन्नाटा छा गया था। ऐसे में एक आदमी हमारे खिड़की के पास आकर शराब पीकर बहुत शोर

मचा रहा था। हम बार-बार उस आदमी को वहां से जाने के लिए कह रहे थे और अनुरोध कर रहे थे कि हमारे सोने का वक्त हो गया है कृपया आप हमें परेशान मत कीजिए। फिर भी वह बेवजह शोर मचा रहा था। इतने में हन्नान जी को गुस्सा आ गया। उस समय हम तीन दोस्त लॉज में थे। हम तीनों को हन्नान जी बुलाकर ले गए और उस आदमी को पीट-पीट कर बहरि थाने ले गए और पुलिस के हवाले कर दिया। इस घटना से मुझे उनके साहसिकता का परिचय मिल गया।

वे बहुत संवेदनशील व्यक्ति थे। इस समय उनकी संवेदना उस शराबी आदमी से नहीं था बल्कि आस-पास के लोगों से था जो इस समय सो रहे थे। आस-पास के परिवेश को वह शराबी अशांत कर रहा था। इस समय सभी लोग दिनभर मेहनत करके सो रहे थे। शराबी ने पूरे परिवेश को अशांत कर रहा था, जो हान्नान जी को अच्छा नहीं लगा। इससे हमें यह पता चलता है कि वह एक अच्छा इंसान था, जो दूसरों के लिए खुदको मुसीबत में डाल रहा था। मैथिलीशरण गुप्त जी की यह पंक्तियां उनके लिए सटिक बैठता है। जो इस प्रकार है-

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।

उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

***निराशाओं के घेरे में**

हन्नान जी की नौकरी नियमित होने के बाद उनके खुशी का ठिकाना न रहा था। उनके अंदर बहुत जोश आ गया था। वे आकाश से बाते करने लगे थे। नई-नई कल्पना से घिरे रहते थे। जो भी कार्य करते थे बड़ी लगन और उत्साह से करने लगे थे। जैसे उनके जीवन में एक नया प्राणशक्ति भर दिया हो किसी ने!

लेकिन कॉलेज के प्रादेशीकृत होने के सिर्फ चार-पांच साल बाद उनका मन उदास-उदास सा रहने लगा। निराशा ने उनके मन में घर बना लिया था। जब हम आपस में बातें करते थे तो बीच में ही कह उठते थे कि मैं ज्यादा दिन जिने वाला नहीं हूं ! उनकी बातें हमें चौका देती थी। हम सोच में पड़ जाते थे कि उन्होंने ऐसा क्यों बोला ? हम उनको पुछते थे कि आप ऐसी बातें क्यों कर रहे है? हम उनको समझाते थे कि - आप इतने संपन्न व्यक्ति है ! खुदा ने आपको अच्छी नौकरी प्रदान की है, आपकी दो

सुंदर-सुंदर बेटियां हैं, एक सुंदर-सुशील बीवी है। आपकी दो बहनें आपके के पास ही रहती हैं। किसी भी प्रकार के मदद के लिए के वे आपके साथ हमेशा मौजूद हैं। गांव में आपका बहुत इज्जत है। गुवाहाटी महानगर में एक प्रतिष्ठित महाविद्यालय में एक विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत रहने के कारण लोग आपको बहुत सम्मान देते हैं। सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से एक मर्यदा संपन्न व्यक्ति है। एक सुंदर व्यक्तित्व के अधिकारी है आप। फिर आप क्यों निराश रहते है। लेकिन लाख समझाने के बावजूद वे दुखी ही रहते थे।

यह कहा जाता है कि एकबार जब इन्सान मन से हार जाता है तो उसकी समस्त ऊर्जा, उत्साह, उमंग, दृढ़ इच्छाशक्ति जैसी कई शक्तियां भी समाप्त हो जाती हैं। जिसके कारण वह व्यक्ति दुबारा उठकर जीने की प्रयास ही नहीं कर पाता हैं। यदि हम छोटी-छोटी निराशाओं को अपनी पराजय मान लेते हैं तो जीवन में उत्साह समाप्त हो जाता है। हमारा जीवन हमें बोझ लगने लगता है, इसीलिए कहा गया है मन का हारना ही वास्तविक हार है। फलत: मनुष्य मन से हार कर तथा अंदर से टूटकर जीवन से हाथ धो बैठता है। यही बात हन्नान जी के साथ हुई थी। उनकी नौकरी नियमित होते ही बड़ी बेटी के लिए एक

एल.आई.सी कराने खबर मुझे आकर दी थी। उनकी दूसरी बेटी के नाम पर भी एल.आई.सी कराई तो मुझे बताया था। इस प्रकार तीन-चार एल.आई.सी करा लिया था। कहता था ये सब मैंने अपनी बच्चियों तथा अपनी बीवी के भविष्य के लिए किया हैं। मेरा क्या, मैं तो ज्यादा दिनों का मेहमान नहीं हूं। ये सब मेरे परिवार के खुशी के लिए है। इसके अलावा उन्होंने गांव में महंगी जमीन भी खरीदी थी। जीवन के विभिन्न उतार-चढ़ावों को पार करते हुए वे जीवन के राह में बड़ी उत्साह के साथ आगे बढ़ रहे थे। वे अपने स्वास्थ के प्रति यद्यपि पूर्णत: सजग रहते थे। परंतु न जाने क्या कारण था जिसकी बजह से वे कभी-कभी बेहकी-बेहकी बातें करते थे।

***अत्यधिक भोजन सेहत के लिए अत्यंत हानिकारक होता है-**

हन्नान जी बड़े ही भोजन प्रिय थे। वे जितना खाते थे, लोगों को भी उतना खिलाते थे। इस आदत ने उनके स्वास्थ्य पर काफी नकारात्मक प्रभाव डाला था। अत्यधिक भोजन प्रियता ने उनके शरीर को काफी नुकसान पहुंचाया था। अत्यधिक भोजन से शरीर में कई प्रकार के बीमारियां पैदा हो जाते हैं। सबसे पहले बवासीर (अर्श) जल्दी आ जाता है। लोग कहते है कि खाते-खाते

ज्यादा खा लिया। कभी-कभी ओवरईटिंग करने से खाना समय पर ठीक से पच नहीं पाता है। फलत: धीरे-धीरे पेट में कब्ज होना शुरू हो जाता है। कब्ज होने के कारण विभिन्न बीमारियां अति शीघ्र ही दिखाई देने लगते हैं।

इसलिए निम्नलिखित रूप में ओवरईटिंग से होनेवाले नुकसान के बारे में चर्चा करने जा रहा हूं। वैसे तो सारे पहलू पर भी वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया जा सकता है। पर वैसा नहीं किया सिर्फ ओवरईटिंग पर चिकित्साशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है। जिससे पाठक खुद ही अंदाजा लगा सकते हैं वास्तव में उन्हें क्या हुआ था?

यहां जिस पहलू पर चर्चा करने जा रहा हूं यह पाठक के लिए महत्वपूर्ण है। क्योंकि आजकल बहुत लोग इसका शिकार हो रहे हैं। स्वादिष्ट-स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद चखना भला किसे नहीं पसंद ! लेकिन खाने के साथ-साथ इसे पचाने की क्षमता रखना भी बहुत आवश्यक है। मेरे ही खानदान में कई लोग हैं जिन्हें ओवरईटिंग के कारण कई समस्याओं का सामना करना पर रहा हैं। वे बहुत कम उम्र में से ही उच्च रक्तचाप, बवासीर और बहुमुत्र के शिकार हो गए हैं। ओवरईटिंग से लोगों की आयु कम

हो जाती हैं। इस तरह की समस्याएं आजकल आम बन गयी है। वैज्ञानिक तर्क के साथ यह चर्चा प्रस्तुत की जा रही है।

बहुतों को यह पता नहीं हैं कि ओवरईटिंग से पाचन तंत्र कमजोर हो जाता है। क्योंकि पाचन तंत्र एक लिमिट तक ही खाने को पचा सकता है। यह ध्यान रखिए कि अगर हम ओवरईटिंग करेंगे, तो उससे खाना न पचने की शिकायत हो सकती है। ओवरईटिंग की वजह से कमजोरी महसूस होती है। उन्हें इसकी दुष्परिणाम के बारे में पता नहीं है।

हम सभी यह जानते है कि अच्छी सेहत के लिए पौष्टिक आहार बहुत जरूरी है। पर ओवरईटिंग करना शरीर के लिए भयानक हो सकता है, क्योंकि ये शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों को नुकसान पहुंचा सकता है।

आप में से अधिकांश लोग इस बात को जानते होंगे कि अधिक भोजन आपके स्वास्थ्य को अस्थिर कर सकता है, क्योंकि अधिक भोजन लेने से आपका पेट पूरी तरह से भर जाता है। जिस कारण पेट में भोजन को पचने में काफी दिक्कत होती है। ये पूरी शरीर की संरचना में परिवर्तन का कारण भी बन सकता है। नियमित रूप से अधिक भोजन करने से ये आपके वजन, बवासीर,

वसा की एकाग्रता और यहां तक कि ब्लड शुगरके स्तर को भी प्रभावित कर सकता है। इसके अलावा, ओवरईटिंग का बड़ा जोखिम उच्च कैलोरी सेवन से जुड़ा होता है जो आपके संपूर्ण स्वास्थ्य के जोखिम पोर्टफोलियो को बढ़ा सकता है।

इसलिए, हम आपको यहां ओवरईटिंग से होने वाले 6 नुकसान के बारे में बताने जा रहे हैं-

i. **अत्यधिक वसा का जमा होना**

यदि आप समय के साथ बार-बार भोजन करते हैं, तो इससे आपकी पाचन क्रिया धीमी हो जाएगी। जो आपके पेट में भोजन को लंबे समय तक स्टोर करती है, शरीर में स्टोर करने के लिए अतिरिक्त वसा को बढ़ावा देती है। एक अध्ययन के अनुसार, शरीर में अत्यधिक वसा का संचय और आवश्यकता से अधिक पोषक तत्व प्राप्त करने से आपको वजन बढ़ने जैसी समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

ii. **इससे डायबिटीज हो सकती है**

अमेरिकन डायबिटीज एसोसिएशन के अनुसार, ओवरईटिंग के बजह से अधिक वजन बढ़ना, टाइप 2 डायबिटीज होने का सबसे बड़ा कारण है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि क्रोनिक ओवरईटिंग ब्लड शुगर को ऊर्जा में परिवर्तित करने के लिए ब्लड सेल्स (रक्त कोशिकाओं) को रोक देती है।जिससे ब्लड शुगर के स्तर को नियंत्रित करना कठिन हो जाता है, जिससे डायबिटीज का खतरा बढ़ सकता है।

iii. **अच्छी नींद में बाधा**

अधिक खाने से व्यक्ति सुस्त महसूस करता है और सोने के तरीके को प्रभावित करता है क्योंकि खाने की इच्छा को दूर करने के लिए जागता रहता है और खाना बीच रात में बनाता रहता है।

iv. **हृदय स्वास्थ्य की समस्या**

ओवरईटिंग से हृदय रोग और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं की संभावना बढ़ सकती है। अधिक खाने से तनाव हार्मोन नॉरपेनेफ्रिन रिलीज हो सकता है, जो हृदय गति और रक्तचाप को बढ़ाता है।

लड़कियों में मोटापे से जुड़े उपापचयन परिवर्तन लड़कों की तुलना में अधिक होते हैं। चित्र-शटरस्टॉक अमेरिकन हार्ट

एसोसिएशन के एक अध्ययन के अनुसार जिन लोगों को पहले से ही दिल की बीमारियां हैं, वो अगर भारी भोजन लेते हैं, तो उन्हें दिल का दौरा पड़ने का खतरा दो घंटे में चार गुना अधिक हो सकता है।

v. **पाचन तंत्र को बाधित करता** है

ओवरईटिंग, विशेष रूप से अस्वस्थ खाद्य पदार्थ आपके पाचन तंत्र को बाधित कर सकते हैं। आप एसिड रिफ्लक्स, सिंड्रोम या आईबीएस, अत्यधिक सूजन, और गैस जैसे पाचन संकट से पीड़ित हो सकते हैं।

vi. **ब्रेन फंक्शन को खराब करता है**

ओवरईटिंग से दिमाग अपना काम ठीक से नहीं कर पाता, क्योंकि खाद्य पदार्थों में उच्च कैलोरी की बड़ी मात्रा आपकी स्मृति को नुकसान पहुंचाती है। असल में, एक न्यूट्रिशन और डायबिटीज के अध्ययन में पाया गया कि ओवरईटिंग यूरोग्रैलाइन के उत्पादन को बाधित करता है। यूरोग्रैलाइन एक ऐसा हार्मोन है जो मस्तिष्क संकेत प्रसारित करने में मदद करता है।

***मृत्यु की खबर**

10 नवंबर 2020 की सुबह थी। मैं अपने बिजनेस प्लेस में अपने काम में व्यस्त था। किसी काम से मुकुट (हन्नान जी का ममेरा भाई) की दुकान के सामने से पश्चिम की तरफ जा रहा था। दुकान से उन्होंने मुझे आवाज दी और कहा- आपको कोई सूचना मिली क्या? मैंने बोला- नहीं। क्या हुआ? मैंने पूछा। बोला कि हन्नान भाई की मृत्यु हो गई है ! यह सुनकर मैं जड़वत सा रह गया। कैसे ? यह पूछने के लिए मुझ में ताकत नहीं बची थी। मैं उनके मुंह की ओर जड़वत देखता ही रह गया। फिर वे स्वयं ही बोलेते गए- कल हन्नान जी को डायरिया-सा हो गया था। समस्या अधिक होने पर दिसपुर ऑस्पताल में भर्ती कराया गया और वही उनकी मृत्यु हो गई।

हन्नान की मृत्यु की खबर मैंने सबसे पहले मेरे सहकर्मी नवकांत शर्मा को फोन करने बताया तो उनको विश्वास नहीं हुआ। फिर उन्हें मैंने बोला रूकिए दिलीप शर्मा (डॉ. रीनारानी बदलै मेडम के पति) सर को फोन करके पता कर लेते हैं। दिलीप सर को फोन किया तो पता चला कि उन्हें भी पता नहीं। उनको भी मुझसे ही पता चला। वे बोल रहे थे कि कुछ दिन पहले हन्नान से मिला था तो उन्हें स्वस्थ्य ही देखा। पहले से तंदुरस्त हो गए थे। इसलिए दिलीप सर को भी विश्वास नहीं हो रहा था। इस खबर

से मैं तथा हमारे घरवाले आहत हो गए। घर के सभी सदस्य उनके लिए दु:ख व्यक्त करने लगे तथा उनकी दिवंगत आत्मा के लिए दुवाएं मागंने लगे।

ऐसी दुखद खबर सुनते ही मैं तुरंत घर पहुंच गया और मेरी पत्नी (मदिना बेगम) को साथ लेकर दिसपुर ऑस्पताल पहुंच गया। वहां पहुंच कर रुहाना, मरमी और हन्नान जी की पत्नी आंजुवारा से मिला। वे अत्यंत दुखी थे और निराशाभरी नजरों से आंसू बहा रही थी। उनके जुबानी से हमने सारी कहानी सुनी।

हन्नान जी को अचानक डायरिया जैसी समस्या हुई तो उनकी एक बहन मरमी जो एक बीएससी नर्स है, उन्होंने अपने अनुभव से प्राथमिक चिकित्सा घर में दिया था। फिर रात के 3 बजे उनको सांस लेने में थोड़ी प्रॉब्लम आ गई थी। फिर बहन ने देर न करते हुए हन्नान जी को तुरंत दिसपुर ऑस्पताल के केविन में भर्ती करा दिया। कुछ देर बाद उनकी हालत नाजुक देखते हुए डक्टर ने उन्हें आईसीयू में सिफ्ट कर दिया। धीरे-धीरे लग रहा था कि वे कोमा में चले गए है। डक्टर सुबह बोल रहे थे कि उन में जान नहीं के बराबर है। हृदय-स्पंदन बहुत कम है। इसलिए डक्टर उन्हें मृत घोषणा नहीं कर पा रहे हैं। लेकिन मरमी को पता था

कि ऑक्सिजन लगा होने के कारण ही थोड़ा-थोड़ा हृदय-स्पंदन हो रहा है। ऑक्सिजन खोलते ही उनके भाइ खत्म हो जाएंगे। मरमी समझ चुंकी थी अब उनके भाई को कोई बचा नहीं सकता ! वे मृत्यु के बहुत करीब है ! मरमी अंदर से एकदम टुंट चुंकी थी। अपने जवान भाई को अपनी आंखों के सामने दम तोड़ते हुए कैसे देख सकती है भला ! जिसके माता-पिता अभी सलामत है ! जिसकी छोटी-छोटी दो बेटियां हैं ! जिसकी एक जवान-सरल-सुशील बीबी है, जिसका रोते-रोते बुरा हाल हो गया है ! जिसे कोई समझा नहीं पा रहा है ! तभी डक्टरों ने हन्नान जी एक अत्याधुनिक मशीन लगाकर देखने को कह रहे थे। परंतु मरमी को पता था यह सब अब किसी काम के नहीं है। सुबह का समय था ऑस्पताल में अभी गांव से कोई पहुंचे नहीं थे। ऐसी परिस्थिति में मरमी ने अपने दिल पर पत्थर रखते हुए दृढ़ता से फैसला लिया कि वे हन्नान जी को घर ले जाएंगे। कुछ देर बाद जब हन्नान जी का छोटा भाई लुतफर ने यह खबर सुना तो उसका अंतरआत्मा एकदम से कांप उठा और उसने बहुत जोड़ से चिल्लाकर रो दिया।

यह सब मैंने अपने आखों से देखी। मेरी जो हालत हुई थी उसे शब्दों में बयान नहीं कर सकता। अब कहां जाऊ, क्या करू कुछ समझ में नहीं आ रहा था। कुछ देर सुन्न सा रह गया। फिर

मैंने डॉ. नवकांत शर्मा जी को फोन किया। उनको मृत्यु की खबर बता दी तब भी वे विश्वास नहीं कर पा रहे थे। मुझे कहने में अंदर से थोड़ा डर सा लग रहा था। मैं उनको निश्चित रूप में कह नहीं पा रहा था। वह भी विश्वास नहीं कर पा रहा था। मेरे किशोर काल का दोस्त था वह ! न जाने कितने खुबसुरत लम्हें उनके साथ बिताया था ! एक ही कॉलेज में भी एक साथ पढ़ाई की थी तथा एक ही कॉलेज में एक साथ अध्यापना कर रहा था। कितने खुश थे हम ! क्या इसी दोस्ती को हमेशा के लिए खो दिया है ? क्या उससे मैं दुबारा नहीं मिल पाऊंगा ? इस तरह मन में अनेक सवाल उठ रहे थे !

कुछ देर बाद कॉलेज से विनीता मेम का फोन आया। बोल रही थी कि हन्नान जी को देखने के लिए कॉलेज से सभी सर, मेडम आ रहे हैं। कोविड का दौर चल रहा था इसलिए ऑस्पताल के अंदर आना सक्त माना था। मैंने गेट में जाकर सिक्यूरिटी गार्ड को बोला तो उन्होंने यह सलाह दी कि एक साथ तो सारे लोग प्रवेश नहीं कर सकते एक-एक करके प्रवेश कर सकेंगे। कॉलेज से कई मेडम आयी, मैं नीचे चला गया और एक-एक करके सभी को अंदर बुलाया और हन्नान जी का दर्शन कराया।

कॉलेज से आए हुए सर-मेडम एक-एक करके कतार से अंदर जाकर हन्नान जी को देखकर आए। मैं भी देखकर आया। उसके बाद सभी ने मिलकर तय किया कि हन्नान जी के शव को कॉलेज में अंतिम श्रद्धांजलि के लिए लेकर जाना चाहिए। पहले उनके घरवाले इस बात की सहमति नहीं दे रहे थे। बोल रहे थे कि ऐसा करने से उन्हें घर पहुंचने और दफन प्रक्रिया में देर हो जाएगी। फिर कॉलेज की तरफ से अनुरोध किया गया कि हन्नान जी ने कई वर्षों तक इस महाविद्यालय में नि:स्वार्थ सेवा दान की हैं। अगर कॉलेज से उनको अंतिम श्रद्धांजलि नहीं दिया गया तो उनकी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी। इसके अतिरिक्त कॉलेज के सभी सदस्य जो ऑस्पताल नहीं आ सके थे उन्हें भी दर्शन करना है।

कॉलेज की औपचारिकता पूर्ण करने हेतु हन्नान जी के शव को ऑस्पताल से लाया गया। शव कॉलेज पहुंचने से पहले मैं वहां पहुंच गया। वहां पहुंकर उनके लिए विभिन्न प्रकार के फूल, फूलों की माला, अगरबत्ती और ममबत्ती की व्यवस्था की। सभी लोग नमी आंखों से शव का इंतजार कर रहे थे। आखिर में हन्नान का शव जल्द कॉलेज पहुंच गया। कॉलेज में फुलों, असमिया गामोछा से अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि ज्ञापन किया गया। व्यथित अध्यापकों ने

अब्दुल हन्नान जी के लिए कुछ शब्द बोले। मैंने भी दो शब्द बोले। अंतिम विदाई के समय हमारे प्रधानाचार्या महोदया के साथ सभी ने शव को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि ज्ञापन करते हुए भावुक हो उठे।

***मृत्यु से पहले मौत से साक्षात्कार**

मृत्यु अटल है, अक्षत है, जिसे टाला नहीं जा सकता। जीवन अनिश्चित है और मृत्यु निश्चित है। जो व्यक्ति इस ज्ञान से परिचित हो जाते हैं। धीरे-धीरे उसके व्यवहार में परिवर्तन आना शुरू हो जाता हैं। सांसारिक मोह-माया से मन उठना शुरू हो जाता हैं। कोई भी व्यक्ति जितना भी बाहादुर क्यों न हो मृत्यु से डर ही जाते हैं। उनकी आंखों के सामने मौत का खौफना दृश्य आने लगते हैं।

इस तरह के लक्षण अब्दुल हन्नान अहमद जी में मृत्यु से कुछ महीने पहले दिखने लगे थे। वे मन से कुछ खोये-खोये से रहते थे। कभी-कभी बहकी-बहकी बातें किया करते थे, बातों-बातों में घबरा जाते थे, कुछ ऐसी बाते भी किया करते थे जिसकी हम कल्पना भी नहीं करते थे। बीच-बीच में पसीने-पसीने हो जाते थे, बातों-बातों में मृत्यु की बातें किया करते थे। ऐसा लगता था कि वे मौत के खौफनाक नजारे से परिचित हो गए हैं।

***अंतिम यात्रा**

हन्नान जी की अंतिम यात्रा हमारे महाविद्यालय से ही शुरू हुई। उनके मृत शरीर को फुलों से अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि देकर अंतिम रूप में विदा किया गया। क्योंकि इसके बाद वे कभी वापस नहीं आएंगे। यह उनकी विदेही आत्मा के प्रति एक आनुष्ठानिक सम्मान मात्र था।

अब्दुल हन्नान अहमद जी को अंतिम विदा करने हेतु मैं और मेरी पत्नी उनके गांव जाने के लिए तैयार हो गए। हम दोनों के साथ मिंटु (हन्नान जी के ममेरा भाई) और उनकी की मां जाने के लिए तैयार हो गए। हम करीबन अपराह्न 4:00 तक दक्षिण गांव से यात्रा शुरू की।

गुवाहाटी से नगरबेरा तक का रास्ता हमारे लिए बिल्कुल नया था। इस रास्ते से हम कभी कहीं नहीं गए। इसलिए नई उत्साह, नई उमंग के बजाय दुखभरी आह लेकर यात्रा शुरू की थी। जो भी हो मेरी पत्नी को यह रास्ता बहुत पसंद आई। रास्ते के दोनों किनारे शाल के वृक्षों से भरे हुए हैं। जितने भी चौक मिले सभी बहुत समृद्ध दिखाई दे रही थी। रास्ते बिल्कुल साफ-सुधरे दिख रहे थे।

बोको, छः गांव से दाहिने मुड़ने के बाद 4-5 किलोमीटर अतिक्रम करते ही हन्नान जी का घर के नजदीक पहुंच गए। अंत में एक छोटा सा मोड़ आते ही हमने लोगों से पूछा तो उन्होंने 50 मीटर आगे जाने को कहा। वहां हमें लोगों की भीड़ दिखाई दी तो समझ गया वहीं हन्नान जी का घर है। हम लगभग 8 बजे तक पहुंच गए थे। उनके घर के सामने एक बड़ा खेल का मैदान है। उसके पश्चिम दिशा में एक मसजिद और एक स्कूल है। उस मैदान में कार पार्किंग के लिए थोड़ी भी जगह नहीं बची है। हन्नान जी को देखने के लिए इतनी भीड़ उमड़ आई कि पैर रखने के लिए जगह नहीं थी। वहां कुछ लोग कह रहे थे कि यह इंसान बहुत अच्छा, बहुत मददगार था। साथ ही दुखः प्रकट कर रहे थे कि बहुत कम उम्र में मिला हुआ सुख इतनी जल्दी खत्म हो गया।

हमें किसी तरह गेट के सामने खड़े होने की जगह मिली। बाहर से ही सुनने को मिल रहा था कि हन्नान जी के लाश को कफनाया गया है, यानी कि दफनाने के लिए तैयार हो गया है। जब हन्नान के परिवार वालों को पता चला कि कन्या महाविद्यालय में काम करने वाले सहकर्मी तथा एकसाथ पढ़ाई करने वाले बचपन के दोस्त डॉ. जाकिर हुसैन आ गए हैं, तब मुझे बड़े आदर के साथ अंदर ले जाया गया। देखा कि परिवार सारे

सदस्य रो-रोके बेहाल हो गए हैं। विशेष रूप से उनके माता-पिता का हाल बहुत ही नाजुक हो गया था। वृद्धावस्था के कारण दोनों बहुत ही कमजोर हो गए हैं। उनका चलना-फिरना भी मुस्किल हो गया था। अपने मरने की उम्र में अगर एक जवान बेटे की मौत हो जाए तो माता-पिता कैसे सहन कर पाते हैं। कुलमिलाकर उस समय हन्नान के घर की हालत बहुत ही दु:ख दायक थी।

उनके माता-पिता को दिलासा देकर घर से निकलने के बाद देखा कि इत्र, गुलाब छिड़क कर तथा कफन से सुसज्जित करके अंतिम विदाई के लिए तैयार किया गया है। घर के लोग उनके अंतिम दर्शन के लिए उमड़ पड़े थे। पर अनेक कोशिश करने के बाद भी मैं घर में उनका दर्शन नहीं कर सका। सभी लोग गेट के बाहर निकल आए। अंतिम समय में घर के सभी लोग तथा पड़ोस के लोग खुब रोए। इस दृश्य को देखकर मेरा दिल भी रो पड़ा।

देह का भरोसा नहीं, ओ मेरे भाई
आज, कल हूं, कह नहीं सकता
कल क्या होगा हाय।
प्राण पखेरू उड़ जायेगा जब

चार कांदे के सहारे ले जायेगा हाय।।

मुसलिम परंपरा के अनुसार लाश को एक चांगारी (यह एक वाहन जैसा है जिसमें लाश रखकर चार जन व्यक्ति कंधे के सहारे कब्रिस्तान तक ले जाते हैं) में रखकर कब्रिस्तान की तरफ चल दिए। इस दृश्य से मैं सोच में पड़ गया कि "इस तरह हमें भी एक दिन जाना होगा। हमें भी अपने घर से निकाल दिया जाएगा। हम भी एक दिन सिर्फ एक लाश मात्र रह जाएंगे। हमारी भी जूलूस निकाली जाएगी। यह सोच कर दिल घबड़ा जाता है। ऐसा लगता है या खुदा हमें दो दिन के लिए इस संसार में भेजा ही क्यूं, कब तुम्हारा बुलावा आएगा और हमें चले जाना होगा। सभी को एक दिन तो जाना ही होगा। यह निश्चित है। इसके लिए तैयार नहीं रह सकते। हां, हदीस में कहा गया कि मौत से डरो मत, मौत की तैयारी करो, हमेशा तैयार रहो। अपने आप को खुदा के हवाले कर दो तब तुम्हें कोई डर नहीं रहेगा।" एक गाना याद आया-

एक दिन जमीन के अंदर होगा तेरा घर
रे मन ....क्यों बनाते हो दालान घर
जहां न है बिछौना, न है पानी,
चारों तरफ घन-घोर अंधेरा।
उसी में पड़े रहोगे, होके निर्विकार।
किसलिए ईष्ट पुत्र, किसलिए ईष्ट मित्र

दम निकलने बाद हो जाते है सब पर
रे मन... क्यों बनाते हो दालान घर।

हमलोग इस संसार को स्थायी समझते हैं। संसार के मोह-माया ने हमें बांध कर रखा है। दूसरी ओर कुछ लोग संसार को दु:ख ही दु:ख समझते हैं। वे फिर इच्छा मृत्यु चाहते हैं। जीवन को एक बोझ समझते हैं। जीवन में आनेवाली समस्याओं का सामना करने का हिम्मत उसमें नहीं है। खैर, जो भी हो एक दिन सभी को जाना ही है। चाहे कितना भी बाहादुर हो या कमजोर हो, राजा हो या प्रजा हो। एकदिन सभी को मृत्यु का स्वाद चखना ही पड़ेगा।"

हम उनके अंत्येष्टि की प्रक्रिया हेतु शव के जुलुस के पीछे चल दिए। मुझे पैदल जाने में तकलीफ होगी जानकर रुहाना (हन्नान जी की छोटी बहन) के पति ने मुझे एक अनजान व्यक्ति के बाइक के पीछे बैठा दिया। करीबन 10-15 मिनट के पश्चात कब्रिस्तान पहुंच गया। जब उस व्यक्ति ने मुझे छोड़ा तो कुछ देर के लिए मुझे समझ में नहीं आ रहा था, कि मैं कहा पहुंच गया हूं। बहुत ही अंधेरी रात थी। चारों तरफ नजर दौड़ाने से काला सागर-सा प्रतीत हो रहा था। कहीं कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। मैं खुदको भी नहीं देख पा रहा था। विशाल सागर के पानी

की बुंद का अनुमात्र सा लग रहा था। काली कोठरी में अपने-आपमें खो गया हूं जैसा लग रहा था। फिर मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। आगे बढ़ते हुए डर भी लग रहा था क्योंकि पैर कहां रख रहा था पता नहीं चल रहा था। संभल-संभल के कदम आगे बढ़ा था। कुछ देर के पश्चात थोड़ी देर के लिए रूक गया। तब तक कोई भी नजर नहीं आ रहा था। 5-10 मिनट तक एक ही जगह पर खड़ा रहा। फिर दूर तक नजर डाली तो दूर.. बहुत दूर एक बत्ती जलती हुई दिखाई दी। फिर एक व्यक्ति के पैर की आहट भी सुनाई दी। वह व्यक्ति द्रुत गति से चलते जा रहे थे। किसी तरह उनसे पूछा कि कब्रिस्तान कहां है, तो बोले कि मैं वहीं जा रहा हूं। यह सुनते ही मेरी जान में जान आ गई। वैसे मैं एक साहसी व्यक्ति हूं। पर एक अनजान जगह में आकर अपने आप को थोड़ा असहज महसूस कर रहा था। क्या यही कब्रिस्तान है? उसने हांमी भरी। इतना बड़ा? इशारे से दिखा दिया। ऐसा लगा यह कब्रिस्तान सागर जैसा विस्तृत है। पता चला कि कई एकड़ जमीन में यह फैला हुआ है। दूर-दूर तक उसका किनारा दिखाई नहीं दे रहा था।

वहां पहुंच कर देखा कि कब्र का गड्ढा खोदा जा चुका है। मैंने देखा कि एक नए तरीके से कब्र खोदा गया था। ऐसा गड्ढा मैंने कभी नहीं देखा था। लोग बोल रहे थे कि ऐसा गड्ढा सबसे सुरक्षित

होता है। इसमें जमीन के ढह जाने का डर नहीं रहता है। वह बहुत खाई तक खोदा जाता है। "हां, मुस्लिम समुदाय में शवों को कब्रिस्तान में खनन करने की विधी है। जैसे हिंदू धर्म में अंत्येष्टि की प्रक्रिया होती है। दफन की प्रक्रिया में मृत व्यक्ति को जमीन के अंदर रखा जाता है। यह आमतौर पर एक गड्ढे या खाई खोदकर, उसमें मृतक को रखकर और इसे मिट्टी से ढंक कर संपूर्ण किया जाता है। दफन को अक्सर मृतकों के सम्मान के संकेत के रूप में देखा जाता है।

गड्ढा खोदाई होने के बाद जनाजा के लिए लोग कतार में खड़े हो गए। मेरी पहचान का वहां कोई नहीं था इसलिए अनजान व्यक्ति के साथ कतार में खड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद कतार में से लोगों को एक-एक करके आगे की तरफ जाते देख मैं सोच रहा था कि लोग कहां जा रहे हैं? पता चला कि हन्नान जी के लाश को अंतिम दर्शन के लिए खोल दिया गया है। लोग बेताबी से देख रहे थे। मुझे भी उनके अंतिम दर्शन का सौभाग्य मिल गया। उनका अंतिम दर्शन न होने के कारण मेरा दिल बहुत दु:खी था। अब मेरा मन को प्रसन्नता मिली। देख रहा था कि उनका चेहरा बहुत खिला हुआ एक अलौकिक नूर भरा हुआ था। उनके चेहरे पर जैसे कोई नूर झलक रहा है।

जनाजे का नामाज अदा होने के बाद दुआएं हो रही थी। दुआ में हुजुर साहब रोते हुए कह रहे थे हन्नान सर बहुत अच्छे आदमी थे। जब भी वे घर आते थे मुझे बुलाकर कहते थे हुजुर साहब आज हमारे घर आईए हम एक साथ खाना खाएंगे। कम से कम महीने में तीन-चार बार बुलाते थे। बहुत ही हंसी मजाक करते थे। हन्नान जी को जन्नत नसीब होने के लिए दुआएं मांगी गई। उसके बाद शव को दफनाने के पर्व को पूर्ण करने हेतु उसे गड्ढे में रखा गया। सगे संबंधी के सभी लोग कलेमा पढ़ते हुए शब पर मिट्टी डाली। अंत में आखिरी दुआं के साथ औपचारिकता पूर्ण किया गया।

कब्रिस्तान से निकलकर एक अनुभव हुआ कि यह एक ऐसी जगह है जहां राजा-प्रजा, दीन-अमीर, आदमी-औरत सब बराबर है। कोई चाहे कितना भी ज्ञानी हो या महाज्ञानी एक दिन सबको यहां आना ही होगा। जीवन हमें उदार और परोपकार के भावना से जीना चाहिए, किसी को कभी भी कष्ट नहीं देना चाहिए। धन के पीछे भागते रहना ही जीवन नहीं है। अपनो के साथ सुख-शांति से जीना चाहिए। हर पल की छोटी-छोटी खुशियों में अपनी खुशी ढुढंना ही जिंदगी है। जिंदगी लंबी हो या

छोटी अंत में हम सभी को एक दिन मौत के आगोश में जाना ही होगा।

इसके बाद हम सभी चलते-चलते हन्नान जी के घर पहुंच गए। वहां रात 12 बजे तक रुका। हन्नान जी के माता-पिता, भाई-बहन, पत्नी सभी को समझा-बुझाकर, दिलासा देकर हम गुवाहाटी के लिए निकल गए। इस समय उनके घर की परिस्थिति ने हमें बहुत विचलित कर दिया था। इतने जवान बेटे, भाई, पति, पिता की मृत्यु को कौन सहन कर सकता है? यह सोच-सोचकर दिल अत्यंत व्याकुल हो जाता है। दिल से आह निकलती है, या अल्लाह क्या तुझे इन मासुम बच्चों, इन वृद्ध माता-पिता पर थोड़ी सी रहम नहीं आई!

***निष्कर्ष**

सामान्य शब्दों में हमारे जन्म से लेकर मृत्यु तक का सफर ही जीवन है। जीवन एक अवसर है जहां हम अपने साथ-साथ दूसरों का भी भलाई कर सकते हैं। अगर आपके जीवन में सुख, शांति है तो आप एक अच्छा और सुखी जीवन जी रहे है और साथ में यदि आपका शरीर आपका साथ दे रहा है तो आप एक सार्थक जीवन जी रहे है।

मनुष्य का जीवन सुख-दु:ख, आशा-निराशा तथा जय-पराजय के पगडंडियों से गुजरते हुए एक दिन अपना अस्तित्व खो बैठता है। जिसका मन कमजोर होता है वह आसानी से हार मान जाता है। मनुष्य के जीवन का अंत हो जाने का मतलब इस दुनिया से उनका अस्तित्व खतम हो जाना है। मनुष्य कुछ दिन उनके किये हुए कर्म को याद करते हैं बाद में वह कहीं मन के अंतराल में छूप जाता है।

जिस चीज का जन्म होता है उसकी की मृत्यु भी अवश्यंभावी है। इसी का नाम जीवन है। इसका आरंभ है तो अंत भी है। आरंभ और अंत के बीच जीवन लटकता रह जाता है। जिस दिन जीवन खतम हो जाता है उसी दिन आरंभ-अंत का खेल भी खतम हो जाता है।

हन्नान जी एक स्वस्थ्य, सबल, साहसी व्यक्ति थे। अब्दुल हन्नान अहमद जी एक योद्धारू थे जिन्होंने अनेक संघर्ष, चुनौतियों, मुसीबतों का सामना डटकर किया। अपने जीवन के छोटे से सफर में उन्होंने जो मुकाम हासिल किया था वह अत्यंत सराहनीय है। वे अब हमारे बीच नहीं रहे। उनकी कमी हमें हमेशा महसूस होगी। उनकी रिक्तता हम पूरा तो नहीं कर पायेंगे। उनके आदर्शों, परिकल्पनाओं, आशाओं को जीवित रखने के लिए उनके विभाग के काम और द्विगुण गति से आगे बढ़ाना होगा। उनकी

दिवंगत आत्मा जहां कहीं भी होगी उसे चिर शांति मिले यही हमारी दुआ है। वे हमारे प्रेरणा के स्रोत है। हमें उनपर गर्व है।

****

अब्दुल हन्नान अहमद विशेष

अब्दुल हन्नान अहमद: करुण स्मृति की बूंद

डॉ. नवकांत शर्मा

प्रस्तावना:

एक परिचित वटवृक्ष जब उखड़ जाता है, एक बहती हुई झरना जब सुख जाती है. एक हरियाली जंगल जब बंजर बन जाता है, एक गुंजता हुआ स्वर जब खामोश हो

लेखकीय संक्षिप्ति

पेशे से अध्यापक, दिमाग से आलोचक, मन से कलाकार डा नवकांत शर्मा हिन्दी और असमिया विषय में स्नातकोत्तर है। वर्ष 2011 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से "आधुनिक हिंदी और असमिया कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन: अज्ञेय और नवकांत बरुवा के विशेष संदर्भ में" शीर्षक विषय में आपने पीएच-डी डिग्री हासिल की।

सम्प्रति कन्या महाविद्यालय के हिन्दी विभाग में सहायक अध्यापक के रूप में कार्यरत डॉ शर्मा के तीन पुस्तकें "आधुनिक असमीया कविता: समीक्षात्मक अध्ययन" (2013), "भाषाविज्ञान परिचय आरु साहित्य समालोचना (2021) तथा "असमीया कवितार चानेकी" (2021) प्रकाशित हो चुकी

जाता है, एक निकला हुआ चांद जब बादल से घिर जाता है. एक खिला हुआ गुलाब जब अकस्मात मुरझा जाता है, एक गाता हुआ कोयल जब चुप हो जाता है तब मानसपटल में अद्‌भुत विस्मय पैदा होना स्वाभाविक है।

मृत्यु जीवन का अन्तिम और शाश्वत सत्य है। जीवन का अन्त तो होना ही है। मनुष्य का देहावसान भी अवस्थ होता है। मृत्यु अवधारित, मौन सत्य है। परंतु फिर भी संवेदनशील मनुष्य अस्वाभाविक, अनाकांक्षित मृत्यु को स्वीकार नहीं कर सकता। जिनके जीवन का सुखद अध्याय का शुरुवात मात्र हुआ था हो, जिनका स्वप्न बिल्कुल अधुरा हो, जिनका उम्र सिर्फ चालीस मात्र हो, जिनके बच्चे एकदम छोटे हो, उनके दु:खद मौत को कैसे स्वीकारा जा सकता है?

परम मित्र, सहकर्मी एक सच्चे हिन्दी प्रेमी अब्दुल हान्नान अहमद के देहावसान के दु:खद समाचार पाकर स्तब्ध हो गया था। नवंबर महीना, 2021 का सुबह मित्रवर डॉ. जाकिर हुसैन साहब से पता चला कन्या महाविद्यालय के तत्कालीन हिन्दी विभागाध्यक्ष अब्दुल हान्नान अहमद और इस दुनिया में नहीं रहे। यह दु:खद संवाद सुनकर कुछ पलों के लिए के लिए मूर्तिवत खड़ा रहा। तत्पश्चात तैयार होकर दिसपुर अस्पताल पहुंचा। परिवार के

लोग, कॉलेज के सहकर्मीगण आंखों में आंसू लेकर बैठे हुए थे। किसी को न कुछ पूछना था, न कुछ बोलना था। जीवन में जब संघर्ष चुनौतिया थी, मुसीबत रही; तब बड़े हिम्मत के साथ सामना करने वाले हन्नान जी आज जीवन के सुखद पल में ऐसे ही चल बसे। ऐसा लगा जैसे जीवन रूपी विशाल समुद्र में एक लहर उठा, कुछ पल तक उसका अस्तित्व रहा और फिर वह विशाल जलराशि, वह लहर हमेशा के लिए विलीन हो गया।

इस रहस्यमय संसार से जो एकबार विदा लेकर अनंत लोक में खो जाते हैं, वह कभी भी लौटकर नहीं आते। संसार और समय बड़ा ही निर्मम और गति शील है। वर्ष 2013 से 2020 तक हन्नान जी का मधुर सान्निध्य मुझे प्राप्त हुआ था। इस लंबी अवधि में अनेक उतार-चढ़ाव का अनुभव प्राप्त हुआ था। हन्नान जी के व्यक्तित्व के कई बिन्दुएं याद आ रही हैं।

1. सदा हसमुख स्वभाव

हन्नान जी हंसमुख स्वभाव के इंसान थे। स्थिति कितने ही पेचीदा और कठिन क्यों न हो, वे हमेशार हंसते-हंसते उसे स्वीकार करते थे। वे एक मजाकिया स्वभाव के आदमी थे। आस पास के लोगों को खुब हंसाते थे। काफी मजेदार कहानी, चुटकुलाएं सुनाते थे। लोगों को हंसाना भी एक कला है। हर किसी

के पास यह कला नहीं होती, परंतु वे इस मामले में महीर थे। शिक्षण के कठोर अनुशासन के बीच हान्नान जी का एक मुलाकात हमें दिल भर देते थे।

2. परिश्रमी अध्यापक

अब्दुल जी बड़े ही परिश्रमी अध्यापक थे। उन्होंने जीवन में आराम को नहीं, कर्म को ज्यादा महत्व दिया था। वह हमेशा सही समय पर कक्षा लेते थे। बच्चों को शिक्षा देते थे। आस-पास कई संस्थाओं के परीक्षा कापियां भी जांचते थे। अपने मेहनत और एकनिष्ठता के बल पर वे अच्छे कमाते भी थे। विभागीय गति विधियों में भी वे हम दोनों सहकर्मियों को साथ लेकर काम करते थे। गलतिया करने पर बच्चों को डांट भी देते थे। नौकरी सरकारी होने से पहले भी हिन्दी विभाग के विकास के लिए काफी योगदान दिया था। उनके अवदान को विभाग हमेशा याद रखेगा।

3. युवा विभागाध्यक्ष

लगभग 32-33 साल की अवस्था में ही हन्नान जी एक सरकारी कालेज के एक स्वीकृत विभाग के विभागाध्यक्ष बने थे। विभाग को व्यवस्थित एवं गतिशील बनाये रखने में आपका बड़ा योगाशन रहा। मुझे याद है कि कालेज के आभ्यंतरीन परीक्षाओं के लिए उनके नेतृत्व में हम सब मिलकर एक ही दिन में सारे प्रश्न

पत्र तैयार कर देते थे और परीक्षा कमेटी के पास जमा कर देते थे। तीनों ही पाठ्यक्रम बराबर बाट लेते थे। हायार सेकंडरी की कक्षाएं आप ज्यादेतर संभालते थे। परियोजना कार्य करते समय भी तीनों अध्यापक एकसाथ मिलकर बच्चों को मार्गदर्शन करते थे। विभागीय कार्यों को आपने हे भलीभांति निभायी।

4. भोजनप्रिय

यह बात सबको विदित है कि हन्नान खाने के बड़े शौकीन थे। कहा जाता है कि दाने दाने में लिखा होता हैं खानेवालों का नाम। एकबार हम तीनों विभाग के लिए किताब खरीदने हेतु एक किताब दुकान पहुंचे। खरीदारी के बाद हन्नान जी ने कहा कि मै अब खाना खाऊंगा। आप मुझे शर्मिंदा मत कीजिए। सचमुच देखते देखते उन्होंने काफी खाना खा लिया। और ज्यादा खाना मांगने पर होटलवालों कहा कि सारा खाना खतम हो गया। तब हन्नान जी ने जबाव दिया था कि क्या खाना दिया, पेट ही नही भरा।

इसके बाद कई ऐसे किस्से हुए जिससे उनकी भोजनप्रियता का पता चलता था। वह खाते भी थे, खिलाते थे। बाद में पता चला कि अत्यधिक भोजनाप्रियता से उनके शरीर को काफी नुकसान हुआ था।

5. रोमांटिक मन के अधिकारी

साहित्य के विद्यार्थी एवं अध्यापक रोमांटिक होना अत्यंत स्वाभाविक है। हन्नान जी बड़े रंगीन मिजाज के आदमी थे। हमारे साथ जब बाते करते थे तब खुल्लमखुला रोमांटिक बातें किया करते थे। हम हंसते हंसते थक जाते थे। कल्पनाशीलता, प्रेमभावना, सौन्दर्यशीलता आदि के कारण आपके मन हमेशा एक कम उम्र के युवा जैसे थे। हमारे पाठ्यक्रम में भी काफी श्रृंगारसपूर्ण और नारी-पुरुष संबंधी अध्याय है। उन विषयों पर भी आपने साहस और खुले मन से पढ़ाया करते थे। दो पल की जिन्दगी इसी खुशी के जीना आपने पसंद किया था।

6. तेज बुद्धिमान

हन्नान जी बड़े तेज दिमाग के इंसान थे। पैसे कैसे कमाना है- इस विषय पर आपका अच्छा ज्ञान था। सरकारी तंखा के अलावा भी अलग अलग राहों से भी पैसे कमाने पर जोर दिया था। पैसों को सही दिशा में निवेश करने पर भी आपने जोर दिया था। मेहनत, ईमानदारी और दूरदर्शिता से आपने किया था। कॉलेज के धन-संचय को संचालित करने में भी आपने पारदर्शिता का परिचय दिया था।

7. मेहमान नवाजी

भारतीय संस्कृति में, अतिथि को साक्षात भगवान का स्थान दिया जाता है। हन्नान जी अपने अतिथि को इज्जत देते थे। उनके घर में कोई भी जाते तो बड़े आदर के साथ कुशल मंगल पूछते और खिलाते पिलाते थे। एकबार मैं भी उनके निवास गया तो बड़े आदर से स्वागत किया और खिलाया पिलाया। विदा लेते समय तक उपहार भी दिया। यह भी सुना है कि दूसरे मेहमानों के साथ भी ऐसा ही वर्ताव करते थे। यह एक सकारात्मक मानवीय स्वभाव है।

8. मददगार इंसान

मुसीबत की घड़ी में किसी को मदद करना बहुत बड़ी बात होती है। हन्नान जी अनेक दिशा में हमेशा आगे रहते थे। कॉलेज में अनेक ऐसे अध्यापक-अध्यापिका तथा कर्मचारी मिलेंगे जिनको हन्नान जी ने इस कार्य में सहायता की थी। इसलिए समय बितने पर भी इस अच्छे गुण के लिए उन्हें याद किया जाता है।

9. सच्चा हिन्दी प्रेमी

हिन्दी विषय के कारण ही हम तीनों अध्यापक एक ही विभाग में बंधे हुए हैं। कन्या महाविद्यालय, हिन्दी विभाग में सेवा करने के साथ इंग्नु और असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति जैसे हिन्दी

संस्थाओं से भी आप जुड़े हुए थे। उनके नेतृत्व में ही हमने विभाग में कई कार्यक्रम मनाया था। वे निस्सन्देह एक सच्चे हिन्दी प्रेमी थे।

10. संवेदनशील पिता

हन्नान जी को एक प्यारा इंसान और संवेदनशील पिता के रूप में देखा था। सरस्वती पूजा के दिन बड़ी बेटी को हमेशा कॉलेज लेकर आते थे। इसके साथ दोनों बेटियों को उचित शिक्षा हेतु हातीगांव के एक अच्छे अंगेजी माध्यम के विद्यालय में दाखिला दिये थे। उनके मन में दोनों बेटियों के लिए अपार स्नेह था।

11. सुन्दर हस्ताक्षर के अधिकारी

सुन्दर हस्ताक्षर हमेशा आकर्षक होता है। हन्नान जी के द्वारा लिखित हिन्दी हमेशा और अंग्रेजी हस्ताक्षर अत्यंत स्पष्ट एवं सुन्दर है। विभाग से प्रकाशित हस्तलिखित पत्रिका 'अनुभूति' में आज भी हन्नान जी के हस्ताक्षर चमक रहे हैं। प्रश्न-पत्रों में भी हन्नान जी के सुन्दर हस्तक्षर का झलक दिखाई देता था।

12. सरल जीवन शैली

गुवाहाटी महानगर के एक सरकारी कॉलेज के नियमित अध्यापक होने पर भी हन्नान साहब सहज-सरल जीवन शैली अपनाते था। उनके पहनावे, रहन-सहन, गाड़ी सवारी आदि में

हमेशा आड़ंबरहीन नीति को पसंद करते थे। सरलता उनके व्यक्त्वि के आभूषण थे।

उपसंहार

अब्दुल हन्नान अहमद हमारे बीच नहीं रहें इस कठोर सत्य को मानना बड़ी पीड़ा की बात है। हन्नान जी नहीं होने पर भी उनके आदर्श और सपने हमेशा जिन्दा रहेंगे। हिन्दी विभाग, कन्या महाविद्यालय हान्नान जी के पास आजीवन ऋणी रहेंगे। परंतु यह संकल्प भी विभाग में हमेशा कायम रहेगा कि हिन्दी विभाग को हमेशा आगे बढ़ाया जाएगा। हन्नान जी की अनुपस्थिति एवं रिक्तता को भर पाना हमारे लिए नामुमकिन है। आपकी दिवंगत आत्मा को शांति मिले। हिन्दी विभाग पर आपकी कृपादृष्टि हमेशा बनी रहे। आपको शत-शत प्रणाम! एक पंक्ति याद आयी:

जिन्दगी कैसी है
पहेली हाय ए
कभी तो हंसाए
कभी तो रुलाए।।

****

अब्दुल हन्नान अहमद विशेष

गुरुवर अब्दुल हन्नान अहमद

धृतिस्मिता दास

स्नातकोत्तर

गुरु के अंदर वह शक्ति है,
जो असंभव को संभव कर सकती है।
ज्ञान ही वह सागर है,
जो बांटने से बढता है।

प्रस्तावना

शिक्षक वह है जो खुद जलकर दूसरो को प्रकाश देता है। वह अपनी उज्जलतम ज्योति से दूसरे को भी उज्वलतम बनाते हैं । शिक्षक वह है जो अपने उज्वलतम अंगारे से भी दूसरे को उज्वल बनाने में सक्षम होते हैं ।विद्दार्थी का भविष्य निर्माता भी यही शिक्षक ही है ।एक शिक्षक का समाज तथा देश के निर्माण में बहुत बडा हाथ होता है और उससे भी एक महत्वपूर्ण है एक विद्दार्थी का भविष्य निर्माण करना । माँ के बाद गुरु ही होती है जो एक विद्दार्थी का जीवन सवार सकते है। अच्छा रास्ता दिखाकर उसे भविष्य का एक सुनहरा सपना दिखा सकते है तथा उसे आने वाले दिनो में हर मुशकिल का सामना करना सिखाते है। हमारे भारतीय समाज में शिक्षक को भगवान के समान तथा उससे बढ़कर मानते है। स्कूल के पहले दिन से लेकर कालेज के आखिरी दिन तक एक गुरु ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। गुरु ही हम जैसे विद्दार्थी का भविष्य स्रष्टा है। एक गुरु ही हमें काबिल बनाते हैं ताकि हम जिंदगी में एक अच्छा मुकाम हासिल कर सके।

ऐसे ही मेरे एक गुरु था जिसका नाम अब्दुल हन्नान अहमद जो आज हमारे बीच में दुर्भाग्य से नही है। वह मुझे हर समय आगे बढने के लिए उत्साहित करते थे प्रेरणा देते थे, जिसके कारण मै बढने तथा सफल हो पायी हूं। उनके इसी प्रोत्साहन के लिए मैं उन्हें नमन करती हूं।

<u>गुरुजी का व्यक्तित्व</u>

वह बहुत ही तेज, ओजस्विताओं से भरपूर, चालाक, बुद्धिमान, तथा भावुक और सहृदयी व्यक्ति थे। समय-समय पर उनका व्यक्तित्व का रंग परिवर्तित होता जाता था। वह थोड़ा गुस्सालु है लेकिन फिर भी उस गुस्सा में कहीं न कहीं मिठास और प्यार भी भरा रहता है। उनका गुस्सा तो हमेशा से ही नाक में ही रहता था विशेषकर मुझे देखकर तो और भी गुस्सा हो जाते थे क्योंकि मैं कक्षा में हमेशा से ही देर करके पहुंचती थी। लेकिन फिर भी वह मेरे बहुत ही आदरणीय शिक्षक थे। आज उनके देहावसान हुए पुरा एक साल हो गए। उनकी अनुपस्थिति मैं आज भी अनुभव करती हूं तथा बहुत दु:खी हूं।

एक शिक्षक में जो व्यक्तित्व होना चाहिए वह सब गुण उनमें विद्यमान थे। स्वस्थ और सुडौल शरीर, चेहरे पर मुस्कुराहत, बोली में कभी कभी मिठास तथा ओजस्वी, आखों में परिवार को लेकर सपना उनके व्यक्तित्व का परिचायक है। वह मेरे शिक्षक होने के साथ साथ एक अच्छे मित्र भी हुआ करते थे। वह कक्षा में सबसे ज्यादा मुझे ज्यादा गाली देते थे तथा गुस्सा करते थे क्योंकि कक्षा में मै ही उनकी प्रिय छात्रा हुआ करती थी। वह बहुत ही खाने में रुचि रखते थे। वह कालेज में सबके साथ घुल-मिल कर बात करते थे। विद्दार्थी को भी वह अपने बच्चों की तरह ही मानते थे। आज उनके वियोग से कन्या महाविद्यालय परिवार शोकग्रस्त हो गए है विशेषकर हिन्दी विभाग।

मार्गदर्शक के रुप में

विद्यार्थी के जीवन में शिक्षक का बहुत ही अहम योगदान होते हैं। शिक्षक ही होते है, जो दूसरे के संतान को अपने संतान मानकर उसे सही राह दिखाते है, उसे जिंदगी की परिभाषा समझाते हैं। हमें जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन तथा उत्साहित करते थे। मेरा गुरु भी मुझे अपनी बेटी की तरह मानकर मुझे भविष्य का रास्ता दिखाते थे। वह मार्गदर्शक के रुप में काम करते थे। उन्होंने मुझे हमेशा से ही पढ़ाई के मामले में हो या बाहरी मामले में मुझे हर तरह से सलाह देते थे। उनके इस सलाह से ही हर जटिल काम आसान हो जाता था। पढ़ाई के मामले में भी वह बहुत ही अच्छे थे। विषय को इतने सहज रुप से समझाते थे कि आसानी से हम विषय को आत्समात करने में असुविधा नहीं होती थी। उनमें विषय को जटिल से सरल बनाने की एक कला थी। उनके यह कला के वजह से ही मैं उनपर प्रभावित होती थी। कबीर दास जी ने कहा-

"गुरु कुम्हार शिष्य कुम्भ है, गढ़ी-गढ़ी काटे खोट,

अंतर हाथ सहार दे बाहर बाहे चोट।।"

इसका मतलब यह है कि गुरु कुम्हार के समान होता है और शिष्य घड़े के समान होते हैं। जिसतरह कुम्हार घडा बनाते समय कच्चे घडे को आकार देने के लिए उसे अंदर से सहारा देते है और बाहर से पीटता है ठीक उसी प्रकार शिक्षक भी बाहर से कठोर है और अंदर से हमे सहारा देता है। मेरे गुरु भी ऐसे ही है, वह बाहर से हमे शासन

करते थे और अंदर से हमे प्यार करते थे और भविष्य के लिए हमे तैयार करते हैं। एक शिक्षक के रुप में उनका अवदान बहुत ही सराहनीय है।

निष्कर्ष- विद्दार्थी जीवन में शिक्षक की आवश्यकता सर्वत्र होती है। शिक्षक बिना विद्दार्थी का जीवन कोई सवार नही सकता। मेरे जीवन में भी अब्दुल सर का बहुत ही अहम स्थान है। एक अच्छा गुरु होने के नाते उन्होंने हमेशा मुझे आगे बढ़ाने की कोशिश की है। आज अगर वह हमारे बीच में होते तो वह मुझे और आगे ले जाने के लिए प्रोत्साहित करते। मुझे भविष्य का सुनहरा सपना दिखाते तथा मुझे होसला देते। लेकिन उनके वियोग से मेरे साथ-साथ पूरा हिन्दी विभाग परिवार शोकग्रस्त हो गए हैं। उनके अचानक स्वर्ग सिधर जाना सभी के लिए असहनीय है। उनके बिना पूरा कन्या महाविद्दालय परिवार तथा हिन्दी विभाग सुना है। मैं नमन करती हूं ऐसे गुरु को जिन्होंने मुझे आगे ले जाने में सफल हुए। अंत में मैं यह कहना चाहती हुं कि वह जहा भी रहे अच्छे से रहे, वह हमारे यादों में हमेशा से हैं और हमेशा से ही रहेंगे। उनके विदेही आत्मा को शांति मिले यही कहकर मैं उनका तर्पण करती हूं।

"देते है शिक्षा शिक्षक हमारे
नमन चरणो में गुरु तुम्हारे।
बिना शिक्षा सुना जीवन है।
शिक्षित जीवन सदा नव जीवन है।"

(संग्रहित)

****

राष्ट्रभाषा विशेष

भारत की राष्ट्रभाषा: समस्याएं एवं समाधान

(अब्दुल हन्नान अहमद जी की पूण्य स्मृति में नया-सृजन,
2014 में प्रकाशित लेख को नया-सृजन,
2022 की संख्या में पूनः प्रकाशित किया जाता है)

अब्दुल हान्नान अहमद,

पूर्व विभागाध्यक्ष

भाषा भावों की अभिव्यक्ति का सबल साधन है। भाषा के सहयोग से ही किसी देशकाल का साहित्य और संस्कृति अक्षुण्ण रहती है। राष्ट्रभाषा किसे कहते हैं? वह भाषा जो समग्र राष्ट्र के लिए संपर्क का कार्य संपन्न करें, जिसके माध्यम से एक राष्ट्र के विविध भाषा-भाषी व्यक्ति अपने भावों का आदान-प्रदान सरलता

से कर सकें, जिसमें राष्ट्र-विशेष का साहित्य एवं संस्कृति जैसी अमूल्य निधियां संजोयी हों वही राष्ट्रभाषा है।

राष्ट्रभाषा की व्याख्या करते समय यह प्रश्न स्वभावत: उठता है कि राष्ट्रभाषा का होना किसी राष्ट्र के लिए इतना अनिवार्य क्यों? राष्ट्रभाषा में कौन सी राष्ट्रीय अनिवार्यता निहित है?

एक राष्ट्र के विविध भाषा-भाषी व्यक्तियों में भावात्माक ऐक्य स्थापित हो सके, इसके लिए अनिवार्य है कि वे आपस में विचारों की अभिव्यक्ति सरलता से कर सकें और यह कार्य 'एक भाषा' द्वारा ही संभव है। विविध भावनाओं को संपूर्ण जनता नहीं समझ सकती, विविध प्रांतीय भाषाओं में विचाराभिव्यक्ति प्रांत विशेष के निवासियों द्वारा ही संभव होती है, अत: किसी देश के लिए एक राष्ट्रभाषा का होना अनिवार्य है।

राष्ट्रीय सम्मान की दृष्टि से भी किसी राष्ट्रभाषा की अनिवार्यता लक्षित होती है। राष्ट्र के निवासी दो व्यक्ति अपने देश में रहते हुए दूसरे राष्ट्रों की भाषा में विचारों का आदान-प्रदान करें यह उस राष्ट्र की भाषिक एवं साहित्यिक दरिद्रता का द्योतन करता है।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का समर्थन

राष्ट्रभाषा की इसी आवश्यकता को देखते हुए भारतीय विद्वानों में भी अपने राष्ट्र के लिए 'एक भाषा' चुनने की इच्छा जागृत हुई और जिस समय देश में स्वतंत्रता आंदोलन जन्म ले रहा था, विदेशी अंग्रेजी शासन की दासता की बेड़ियों को झटक देने की बलवती इच्छाएं देश के साहित्यकारों, कर्णधारों में वेग उत्पन्न कर रही थी, देश के लिए राष्ट्रभाषा चुनने का भी प्रस्ताव उठाया गया। उस समय बंगाल के देवचंदसेन, बंकिम चंद, माइकल मधुसूदन दत्त, द्विजेंद्र लाल राय ने 'हिंदी' को राष्ट्रभाषा बनाने का आग्रह किया।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात सन् 1948 ई. में राष्ट्रभाषा का यह प्रश्न संविधान में रखा गया और राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन, राजगोपालाचारी तथा गांधी जी ने राष्ट्रभाषा के लिए 'हिंदी' को ही योग्य ठहराया और 14 सितंबर, 1949 ई. से इसे राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में लागू करने का निर्णय लिया गया।

हिंदी ही राष्ट्रभाषा क्यों?

राष्ट्रभाषा के संदर्भ में प्रांतीय भाषाओं की हिंदी से तुलना करते हुए जो समान साहित्यिक, अभिव्यवस्थात्मक समृद्धि प्रस्तुत की गई वह तो पूर्णतया ठीक है, किंतु विचारणीय यह है कि हिंदी के द्वारा भारत के जिस विशाल समूह के भावों की अभिव्यक्ति होती है, वैसी ही तमिल, तेलगू, राजस्थानी, बंगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं के द्वारा नहीं होती? दूसरी बात यह है कि हिंदी भाषा का विस्तार-क्षेत्र कच्छ से कामरूप और कश्मीर से कन्याकुमारी तक है देश के कोने-कोने में इसके बोलने वाले, पाये जाते हैं। अन्य भाषाएं केवल अपनी प्रांतीय सीमा में ही बोली और समझी जाती है। इस प्रकार विस्तृत क्षेत्र एवं भावात्मक ऐक्य स्थापित करने की प्रबल शक्ति के कारण ही हिंदी राष्ट्रभाषा बनी।

राष्ट्रभाषा हिंदी की समस्याएं

विद्वानों द्वारा हिंदी की अनेक कमियों की ओर इंगित किया गया। ये कमियां अथवा समस्याएं निम्नलिखित हैं-

—. पारिभाषिक शब्दावली की समस्याएं- हिंदी राष्ट्रभाषा की सर्वप्रथम और सर्वप्रमुख समस्या पारिभाषिक शब्दावली की है। राष्ट्रभाषा का प्रयोग देश-विदेश के शासन, न्याय एवं ज्ञान-

विज्ञान तथा साहित्य आदि सभी क्षेत्रों में होता है। हिंदी का प्रयोग भी ज्ञान-विज्ञान और न्याय के क्षेत्र में सफलता के साथ हो सके, इसके लिए आवश्यक है कि इनसे संबंधित नवीन पारिभाषिक शब्दावलियों का निर्माण किया जाए तभी ज्ञान और विज्ञान संबंधी ग्रंथ हिंदी में सुलभ हो सकेंगे, शासन और न्याय में उसका प्रयोग हो सकेगा।

धीरे-धीरे देश के विद्वान इस ओर जागरुक होकर श्रम करने लगे हैं और नयी-नयी पारिभाषिक शब्दावलियों का निर्माण किया जाने लगा है।

二. **व्याकरण की समस्याएं-** विद्वानों ने शुद्ध हिंदी लिखने और बोलने के मार्ग में दो विशेष कठिनाइयों की ओर संकेत किया है-

1. **हिंदी में 'ने' परसर्ग** का प्रयोग निश्चित नहीं है। अत: अन्य भाषा-भाषी को इसे सीखने में कठिनाई होती है।

वस्तुत: हिंदी के संबंध में यह पूर्णत: कल्पित दोष है। 'ने' परसर्ग सकर्मक क्रिया, भूतकाल एवं उसके छ: भेदों में प्रयुक्त होता है, जिसे प्रत्येक भाषा-भाषी सुविधा से सीख सकता है।

2. **हिंदी-लिंग व्यावस्था** अत्यंत जटिल है। लिंग परिवर्तन कब, कहां और कैसे बदल जाता है, इसका समझना टेढ़ी खीर है।

किंतु यदि ध्यान से देखा जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि हिंदी का लिंग विधान अन्य भाषाओं की अपेक्षा सरल है। अन्य भाषाओं में जहां तीन लिंग पाये जाते हैं, वही हिंदी में सिर्फ दो स्त्रीलिंग और पुलिंग।

3. **वर्तनी की समस्या-** हिंदी का सबसे बड़ा दोष यह बताया जाता है कि इसमें वर्तनी के विभिन्न प्रयोग किए जाते हैं, यथा- जायेंगे, जाएगें, जायगें, जावेंगे इसमें कौन सा रूप शुद्ध है जिसका प्रयोग होना चाहिए। अनुस्वार एवं चंद्रबिंदु के संबंध में भी वही समस्या है।

इसमें सुधार लाने के लिए विविध रूपों को हटाकर केवल एक रूप को अपनाने की राय दी गई है।

4. **लिपि की समस्या–** समस्याओं का संकेत करते समय हिंदी की नागरी लिपि की मुद्रण, टंकन, वर्णाक्षरों की अधिकता तथा लेखक की कठिनाई की ओर भी विद्वान वर्ग संकेत करना नहीं भूले हैं और ऐसा कहते हुए रोमन लिपि का समर्थन किया है।

लिपि के संबंध में संकेत की गई कमियां तर्कहीन हैं। दूसरे थोड़ी-बहुत ऐसी तो प्रत्येक लिपि में पाई जाती है केवल हिंदी में नहीं।

राष्ट्रभाषा हिंदी के संबंध में उठाई गई ये सभी समस्याएं महत्वपूर्ण नहीं है। हिंदी भाषा में साक्षरता की कमी को दूर करने के लिए सरकार ने देश की सभी शिक्षण संस्थाओं में हिंदी अनिवार्य कर दी है तथा राजभाषा के रूप में हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं का व्यवहार हो रहा है।

हिंदी विशेष

विश्व पंचायत में हिन्दी की गूंज (न्यूयार्क की यात्रा)

रफिकुल हक

न.सी.सी., नवलेखक शिविर, नवीकरण जैसे विविध पाठ्यक्रमों के जरिए मुझे भारत भ्रमण करने की सुविधा छात्र अवस्था से ही मिलती रही। भारतवर्ष की सीमा पार करके विदेश भ्रमण करने की उम्मीद बचपन से ही संजोये रखा, पर उसमें कामयाब नहीं हो पायी। अष्टम विश्व हिन्दी सम्मेलन ने वाकई मेरे विदेश भ्रमण की प्रबल इरादा को सफल बना दिया। न्यूयार्क में सम्पन्न होने वाले सम्मेलन की सदस्य सूची में मेरा नाम इन्टरनेट के पर्दे पर दिखाई दिया। 1178 मेरा पंजीकृत नम्बर है। 3 जुलाई, 2007 को मैं और मेरा साथी दयानन्द भूयां विजा (Visa) प्राप्ति के लिए कोलकता स्थित अमेरिका राजदुतावास गए। हमें 100 दिन के लिए विजा (Visa) मिला 11 जुलाई, 2007 को हमने गुवाहाटी से दिल्ली होकर न्यूयार्क यात्रा का शुभारंभ किया। फिर दिल्ली से जर्मन हवाई जहाज लुफानसा से मिठनिक पहुंच गये। एक घंटा आराम के बाद दोपहर को वही विमान से 12 तारीख के अपरान्ह न्यूयार्क के जॉन एफ केनेडी हवाई अड्डे पर कदम रखा। वहां से टेक्सी में बैठा और होटल पेन्सिलभेनिया (पंच तारका) पहुंच गये। ठहरने के लिए 599 नं का कमरा दिया गया। दिनांक 13 को कार्यसूची शुरु हुई।

13 जुलाई से 15 जुलाई, 2007 तक आठवां विश्व हिन्दी सम्मेलन न्यूयार्क में संपन्न हुआ था। खासकर राष्ट्रसंघ के मुख्यालय इस सम्मेलन का उद्घाटन समारोह 13 जुलाई 2007 को होना एक ऐतिहासिक कदम और युगान्ततरी घटना है। साथ ही साथ **विश्व मंच पर हिन्दी** इस मूल बिन्दु को रेखांकित एवं रूपायित करने वाला यह बहुचर्चित सम्मेलन एक विशिष्ट उपलब्धि है। विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली दूसरी भाषा हिन्दी की ध्वनि संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय के 4 नं सभागार में उद्घोषित एवं मुखरित होना भी एक अभुतपूर्व घटना और अपूर्व प्रगति कही जा सकती है। भारत, नेपाल, मॉरीशस, पाकिस्तान, फिजी, सुरिनाम, त्रिनिदाद, टवेगो, गयाना, हॉलैण्ड, अमरिका, कनाडा आदि देश में हिन्दी विषय की पढ़ाई एवं अध्ययन होना भी महत्वपूर्ण बात है। हिन्दी के साहित्यकार, कवि, गीतकार, संगीतकार, हिन्दी सेवी शिक्षक, पत्रकार, संवाददाता, प्रचारक आदि का अत्याधुनिक नगर न्यूयार्क में शामिल होना भी अपने में उल्लेखनीय कदम है।

13 जुलाई 2007 को सुबह 10 बजे संयुक्त संघ मुख्यालय के सभागृह में संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बान की मुन ने अष्टम हिन्दी सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में सभा को संबोधित

किया- नमस्ते मैं थोड़ा हिन्दी जानता हूं। मेरा दामाद हिन्दी भाषी है। प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह के करीबी रिश्तेदार है। इस प्रकार संयुक्तराष्ट्र के महासचिव बान की मून ने कुछ वाक्य हिन्दी में बोलकर उपस्थित प्रतिनिधियों का दिल जीत लिया।

उस समय सभागर के मंच पर बैठे हुए थे भारत के विदेश राज्यमंत्री आनन्द शर्मा, भारत के राजदूत रनेन्द्र सेन, संयुक्त राष्ट्र भारत के स्थायी प्रतिनिधि निरूपम सेन, नेपाल के उद्योग, वाणिज्य एवं आपूर्ति मंत्री राजेंद्र महतो, मारीशस के शिक्षामंत्री एवं मानव संसाधन मंत्री धरमवीर गोकुल और न्यूयार्क स्थित भारतीय विद्या भवन के निदेशक नवीन मेहता। उद्घोषिका शीला चमन ने उपस्थित सभी लोगों का स्वागत किया। भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के वीडियो कनफोरसिंग व्यवस्था द्वारा वीडियो संदेश पेश किया गया। जिसका संक्षिप्त सार इस प्रकार है-

सन् 1975 में नागपुर से शुरू हुई हिन्दी की विश्व यात्रा आज आठवां विश्व सम्मेलन के रूप में अपनी एक खास मंजिल तक आ पहुंची है। यह सफर दिलचस्प एवं रोमांच भरा है। पोर्ट लुइस से होते हुए नई दिल्ली, पोर्ट ऑफ स्पेन, लंदन, पारामारिबो

से गुजरता हुआ ये कारवां आज न्यूयार्क आ पहुंचा है। अमेरिका में हो रहे आठवां सम्मेलन की खास अहमियत हैं। अमेरिका में बसे भारतीय लोगों इस देश के हर क्षेत्र में अपनी एक पहचान बनाई है। मुझे यकीन है कि आने वाले दिनों में भारत और अमेरिका के रिश्ते और भी मजबूत बनेंगे। आज हिन्दी विश्व भाषा बन चुकी है। आज अमेरिका में भी हिन्दी की पढ़ाई का ख्याल किया जा रहा है। सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में पास प्रस्तावों में से एक यह भी था कि हिन्दी संयुक्त राष्ट्र में एक आधिकारिक भाषा बनाई जाए। हम उस दिशा में भी कार्य कर रहे हैं। इस सम्मेलन में पास प्रस्तावों पर भी तेजी से कार्यवाही की जाएगी। मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि आज हिन्दी को दुनियाभर में तेजी से फैलाने में सूचना प्रौद्योगिकी ने अहम भूमिका निभाई हैं। इस मौके पर मैं कुछ सुझाव देना चाहता हूं। इससे विश्व भाषा हिन्दी का सम्मान हमें बाहर बसे अनिवासी भारतीय लेखकों का हिन्दी साहित्य भी पाठ्यक्रम में लेना होगा। दुनिया के अनेक देशों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। ऐसे देशों के लिए मानक पुस्तकें बनानी होंगी। हिन्दी को इंटरनेट की ताकतवर भाषा बनाने के लिए अच्छे हिन्दी सॉफ्टवेयर- हार्डवेयर एवं सर्वं बनाने बनाने होंगे। जय हिन्द जय हिन्द।

विदेश राज्यमंत्री (भारत सरकार) आनन्द शर्मा ने कहा है कि आज विश्व हिन्दी सम्मेलन ने 32 साल का सफर पूरा कर लिया है। आज 110 करोड़ भारतीयों की आवाजे दुनिया सम्मान के साथ सुन रहा है भारत की आजादी के 60वें वर्ष में संयुक्तराष्ट्र ने महात्मा गांधी के जन्मदिन 2 अक्तुबर को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है।

भारत के राजदूत रनेन्द्र सेन ने प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा है कि हिन्दी का योगदान सभ्यताओं के मेल-मिलाप के लिए हैं संघर्ष के लिए नहीं। इस विशेष अवसर पर सम्मेलन की आयोजक समिति के संरक्षक के तौर पर समिति के सभी सदस्यों की ओर से सम्मेलन में भाग ले रहे सभी प्रतिनिधियों का मैं हार्दिक स्वागत करता हूं। उन्होंने अपने संदेश पत्र में कहा है कि मुझे विश्वास है कि आठवां विश्व हिन्दी सम्मेलन देश-विदेश और दूर-दूर से आए हिन्दी प्रेमियों के लिए उत्साहवर्धक होगा और उनकी आशाओं पर खड़ी उतरेगा। इस अवसर पर में भारतीय विद्या भवन, न्यूयार्क और उन सभी स्वयंसेवी संस्थाओं और मित्रों को धन्यवाद देता हूं जिनके सहयोग के बिना इस सम्मेलन का आयोजन संभव नहीं हो पाता।

मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री धर्मवीर गोकुल ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा- संयुक्त राष्ट्र में अधिकारिक भाषा के रूप में हिन्दी को मान्यता मिलनी चाहिए क्योंकि यह अधिक महाशक्ति के रूप में उभरते भारत की भाषा है।

नेपाल के उद्योग, वाणिज्य एवं आपूर्ति मंत्री राजेन्द्र महतो जोर देकर कहा आज हिन्दी नेपाल की स्वाभाविक भाषा बन गई है। भारतीय विद्या भवन के अध्यक्ष (न्यूयार्क) नवीन मेहता ने कहा- हिन्दी हमारे लिए एक भाषा से अधिक भारतीय संस्कृति के सम्मान का प्रतीक है।

वस्तुतः संयुक्त राष्ट्र विश्व मानवता की गरिमा, स्वतंत्रता और समानता का पुंज है। ऐसे विश्व मंच पर हिन्दी की स्थापना के लक्ष्य का गुंजित होना ही हिन्दी सहित समस्त भाषाओं को वैश्विक ऐतिहासिक महत्वपूर्ण एवं गौरवपूर्ण सम्मान प्रदान करना उल्लेखनीय कदम कहा जा सका है।

अंत में आनन्द शर्मा ने गगनांचल के विशेषांक और हिन्दी उत्सव ग्रन्थ 2007 और अमेरिका के हिन्दी विद्वानों की निर्देशिका

का विमोचन किया। वास्तव में यह पहला अवसर था कि संयुक्त राष्ट्र का कोई महासचिव पहली बार विश्व हिन्दी सम्मेलन को संबोधित करते हुए हिन्दी भाषा की प्रशंसा कर हिन्दी भाषा के प्रति सम्मान प्रदर्शन कर रहा था।

हिन्दी एक अंतर्राष्ट्रीय विश्व भाषा के रूप में विकसित होने की राह एवं विश्व मंच पर कदम बढ़ा रही है। अब तक संयुक्त राष्ट्र में छह आधिकारिक भाषाएं स्वीकृत रही है- अंग्रेजी, रूसी, चीनी, स्पेनिश, फ्रेंच और अरबी। 1973 में अरबी भाषा संयुक्त संघ की आधिकारिक भाषा बनी थी। सन् 1945 में संयुक्त राष्ट्रसंघ में केवल पांच भाषाएं थी। अब तक उपरोक्त छह भाषाएं सुरक्षा परिषद की भाषाएं भी बनी रही है। अब हिन्दी की बारी है। इसलिए अष्टम विश्व हिन्दी सम्मेलन का प्रमुख विषय है- विश्व मंच पर हिन्दी ताकि वहां सम्मानजनक स्थान हो। इस महासम्मेलन का मूल लक्ष्य एवं उद्देश्य इस प्रकार है

1. संयुक्त राष्ट्र की एक आधिकारिक भाषा के रूप में हिन्दी भाषा को मान्यता प्रदान करना।
2. एक विश्व भाषा के रूप में हिन्दी भाषा का मूल्यांकन करना।

3. विदेश में हिन्दी भाषा के साहित्य का विकास का मूल्यांकन करना।

4. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी की आवश्यकता का मूल्यांकन करना और सूचना तकनीकी के क्षेत्र में होने वाले विकास के अनुकूल भाषा के रूप में हिन्दी को रेखांकित करना।

5. युवा पीढ़ियों में हिन्दी को प्रोत्साहित करना और इसको लोकप्रिय बनाना।

6. विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की स्थिति पर समीक्षा करना।

उद्घाटन समारोह के बाद 11 से 12 (दोपहर) तक संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी शीर्षक बीज व्याख्यान पहला शैक्षिक सत्र काफ्रेंस रूम- 4 में शुभारंभ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता भारत की राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा डॉ. गिरिजा व्यास ने की। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के प्रधानमंत्री अनन्तराम त्रिपाठी ने अपना महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक बीज व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि दुनिया में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा को संयुक्त राष्ट्र में स्थान मिलना ही चाहिए। भारत सरकार को इसके लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। अनन्तराम त्रिपाठी के

अतिरिक्त प्रो. हरमन वैन ऑल्फन, चीन के प्रो. जियांग जिंग कुई तथा मॉरीशस के विश्व हिन्दी सचिवालय की महानिदेशक डॉ. विनोद बाला अरुण (हिन्दी, संस्कृत और भारतीय दर्शन की विदुषी महिला) ने भी अपना-अपना बीज व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसी बीच भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की ओर से तीन प्रदर्शनियां लगाई की गयी, जिनका उद्घाटन आनन्द ने किया।

भोजन अवकाश के बाद फैशन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालाजी के हाफ्ट ऑडिटोरियम शैक्षिक -2 (समानांतर) का आरंभ हुआ। जहां बीज व्याख्यान का विषय था- **देश-विदेश में हिन्दी शिक्षण** इस सत्र की अध्यक्षता भारत के मानवाधिकार आयोग के सदस्य प्रेमचंद्र शर्मा ने की। दक्षिण कोरिया की प्रो. यू.जी. किम, वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग के पूर्व अध्यक्ष सूरजभान सिंह, उजबेकिस्तान की डॉ. उलफत मुखीबोवा, जापान के प्रो. ताकेशी कूजई, केंद्रीय हिन्दी शिक्षण संस्थान के डॉ. श्रीचन्द जायसवाल, हंगीरी की खा अराड़ी, डॉ. पद्मेश गुप्त, इटली की प्रो. दोनातोल चीनी, वारसा में विनिटिंग प्रोफसर रहे डॉ. हरजेन्द्र चौधरी और गयाना की प्रथम महिला श्रीमती वासिनी जगदेव ने अपना-अपना प्रभावी व्याख्यान प्रस्तुत किए। डॉ.

अंजना संधीर ने कार्यक्रम का सुचारू रूप से सफल संचालन किया।

वैश्वीकरण, मीडिया और हिन्दी शीर्षक बीज व्याख्यान की शुरुआत के.टी. मर्की थिएटर में शीर्षक सत्र- 3 के अंतर्गत की गई। इस सत्र में माखनलाल चुतर्वेदी विश्वविद्यालय के कुलपति अच्युतानंद मिश्र, रवीन्द्र कलिता, कालिकट विश्वविद्यालय की हिन्दी प्राध्यापिका बी. सुधा, मधुसूदन आनन्द, पंकज शर्मा, राजस्थान विश्वविद्यालय के संजय थानाव और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के रामबक्ष जाट ने अपना-अपना विचार प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता श्रीमती मृणाल पाण्डे ने की। राहुल देव ने सत्र की संचालन किया।

13 जुलाई रात आठ बजे हाफ्ट सभागार में कवि सम्मेलन की महफिल सजाई गई। जिसका संचालन अशोक चक्रधर ने किया। गीतकार गुलजार, बाल कवि बैरागी, कन्हैयालाल नन्दन, सुरेन्द्र शर्मा, पवन जैन, बुद्धिना मिश्र, तेजेन्द्र शर्मा, उषा राजे सक्सेना, विजय किशोर मानव, हरेन्द्र प्रताप, पद्मेश गुप्त, राजमणि, आलोक श्रीवास्तव, श्रीमती जय शर्मा,

अंजना संधीर, रमा पाण्डे आदि ने अपनी अपनी कविताएं पाठ कर सुनाई।

14 जुलाई, शनिवार सुबह 10 से 12.30 बजे तक शैक्षिक सत्र- 4 हाफ्ट सभागार में सुचारु रूप से सुनीता जैन और इंदिरा गोस्वामी (मामनी रयसम गोस्वामी) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सत्र में चर्चा का विषय था **विदेशों में हिन्दी सृजन** (प्रवासी हिन्दी साहित्य)। इस सत्र के चर्चा में देश विदेश से आठ विद्वानों ने हिस्सा लिए।

अन्य एक समानांतर शैक्षिक सत्र- 7 में **हिन्दी, युवा पीढ़ी और ज्ञान-विज्ञान** शीर्षक व्याख्यान केटी मर्फी थिएटर में सम्पन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता वाई. लक्ष्मी मित्र, पूर्व सांसद (भारत) और गोविन्द मिश्र (भारत) कर रहे थे।

14 जुलाई, रविवार अंतिम दिन कार्यक्रम इस प्रकार रहा- **हिन्दी भाषा और साहित्य: विविध आयाम** शीर्षक विषय की चर्चा शैक्षिक सत्र- 8 में 10 से 12.30 बजे तक हाफ्ट सभागृह में चित्रा मुदगल की अध्यक्षा में सम्पन्न हुआ। इस सत्र में प्रो. शुंभुनाथ (निदेशक केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा), रमणिका

गुप्ता (सामाजिक कार्यकर्ता) और प्रभा खेतान ने अपने अभिमत व्यक्त किए।

शैक्षिक सत्र 9 बहुत ही महत्वपूर्ण रहा और रोमांचक भी। यह सत्र तीन भागों में भेद किया गया। यथा- (क) **साहित्य में अनुवाद की भूमिका** (ख) **हिन्दी और बाल साहित्य** (ग) **देवनागरी लिपि**। मुझे भी **साहित्य में अनुवाद की भूमिका** शीर्षक विषय के अंतर्गत अपना विचार प्रकट करने का मौका मिला। मैंने **असम में हिन्दी के प्रसार-प्रचार में शंकरदेव की भूमिका** अंतर्गत बहुत ही कम समय में (कारण समय का अभाव था) **अनुवाद साहित्य** पर प्रकाश डाला। इस सत्र की अध्यक्षता गोपीचंद नारंग ने की और राजेन्द्र मिश्र ने इस सत्र का संचालन किया। नन्दकिशोर पाण्डे (अरुणाचल) ने भी इस सत्र में अपना विचार अभिव्यक्त किया।

सत्र नं (ख) में **हिन्दी और बाल साहित्य** पर चर्चा हुई। इस सत्र की अध्यक्षता बालशौरि रेड्डी (चेन्नई) ने की। हरिकृष्ण देवसरे, सुशीला गुप्ता आदि वक्ता के रूप में इस सत्र में हिस्सा ग्रहण किए। देवनागरी लिपि सत्र में आदरणीय सूर्यवंशी चौधरी तथा श्री दयानंद भुयां ने अपने वक्तव्य रखे।

15 तारीख शाम 3 बजे से केटी मर्फी एम्फी थिएटर में विश्व हिन्दी सम्मान एवं सम्मेलन का समापन समारोह का सम्पन्न हुआ। समापन समारोह में डॉ. कर्ण सिंह ने **आठवां विश्व हिन्दी सम्मेलन की सार्थकता** पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि मुझे हर भाषाएं अच्छी लगती है और मैं सभी भाषाओं को प्रेम करता हूं। सन् 1975 में नागपुर में आयोजित और नागपुर से आरंभ विश्व हिन्दी सम्मेलन का सफर न्यूयार्क की मंजिल तक पहुंच चुका है और इसकी बदौलत हिन्दी आज संयुक्त राष्ट्र के द्वार पर दस्तक दे रही हैं।

उस समय मधुकर राव चौधरी, धरमवीर गोकुल, राजेन्द्र महतो और श्रीमती विनोदवाला अरुण मंच पर विराजमान थे। इसके बाद हिन्दी सेवियों और विद्वानों को डॉ. कर्ण सिंह, मधुकर राव चौधरी, राजेन्द्र महतो और धरमवीर गोकुल ने विश्व हिन्दी सम्मान से सम्मानित किया। जिस क्षण का हम लोगों को इंतजार था, वो क्षण आ गया जब श्री सूर्यवंशी चौधरी को **हिन्दी भाषा और साहित्य** के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान के लिए विश्व हिन्दी सम्मान से सम्मानित मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधान मंत्री श्री धरमवीर गोकुल ने किया। हम सब पूर्वोत्तरवासी इस पर

गर्व महसूस कर रहे थे, जिन्होंने आजीवन हिन्दी की सेवा में अपने आपको समर्पित कर दिया। पूर्वोत्तर में हिन्दी प्रचार के एक स्तंभ के रूप में सूर्यवंशी चौधरी जाने जाते हैं। इस वयोवृद्ध हिन्दी सेनानी को विश्व हिन्दी सम्मान मिलना हम सबके लिए अनन्त सुखदायी है। गौरतलब है कि 1975 से आरंभ हुए विश्व हिंदी सम्मेलन में पूर्वोत्तर से 2007 तक एक भी हिंदी सेवक को विश्व हिंदी सम्मान प्राप्त नहीं हुआ था।

सम्मानित विदेशी हिन्दी सेवी गण हैं

1. वीर सेन जागा सिंह (मॉरीशस)
2. प्रो. दोना नेल्ला दोल चीनी (हंगरी)
3. एचा आरादि (हंगरी)
4. गेनादी शलौम्पर (इजरायल)
5. प. हरिदेव सहतू (सूरीनाम)
6. हर्मन बैन आलफन (अमरीका)
7. प्रो. जियांग जिंग कुई (चीन)
8. मोहन कांत गौतम (नीदरलैण्ड)
9. प्रो. मुमताज उस्सानोव (ताजिकिस्तान)
10. पद्मेश गुप्त (यू.के)

11. सुरेन्द्र गंभीर (जापान)
12. प्रो. ताकेशि कुजिई (जापान)
13. उलफत मुखीबोवा (उजबेकिस्तान)
14. प्रो. बू. जो किम (पश्चिम कोरिया)

विश्व हिन्दी सम्मान से विभुषित भारतीय व्यक्तिगण हैं

1. अच्युतानन्द मिश्र (भोपाल)
2. सूर्यवंश चौधरी (गुवाहाटी)
3. श्रीमती अजीत गुप्ता (जयपुर)
4. जगदीश पीयुष (दिल्ली)
5. कृष्ण दत्त पालीवाल (दिल्ली)
6. लल्लन प्रसाद व्यास
7. एम. शेषन
8. मणिक्याम्बा
9. मोहन धरिया
10. निर्मला जैन
11. ओम विकास
12. प्रेमशंकर गुप्ता
13. वी. एस. शान्ताबाई
14. सुनीता जैन
15. स्वदेश भारती

15 जुलाई का अन्तिम कार्यक्रम सांस्कृतिक संध्या देखने रात 9 बजे एफ.आई.टी. पहुंचे। जहां भारत के प्रसिद्ध गायक पंकज उधास का सांस्कृतिक कार्यक्रम था। अष्टम विश्व हिन्दी सम्मेलन की अन्तिम शाम पंकज उधास के गायन के साथ सम्पन्न हुआ। इस तरह 8वां विश्व हिन्दी सम्मेलन सफल रहा।

ऊपसंहार

आज हिन्दी भाषा दुनिया की प्रधान विकसित भाषाओं में से एक है। अमेरिका में हिन्दी के प्रति आत्मिक अनुराग है तथा हिन्दी भाषा एक संस्कारशील भाषा के रूप में सम्मानित है। विश्वविद्यालयों में हिन्दी के प्रतिष्ठित विभाग। हिन्दी सीखनेवाले विद्यार्थी हिन्दी काव्य पाठ, भाषण, नाटकों के मंचन जैसे अनेक गतिविधियों का सम्पादन करते हैं। अमेरिका की यात्रा के दौरान हमने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर (WORLD TRADE CENTER)

जो ध्वस्त हो चुका है, स्टेस ऑफ लिबर्टी (STATUE OF LIBERTY), व्हाइट हाउस (WHITE HOUSE), आब्राहम लिंकन स्मारकस्थल, सिनेट हॉल, सुप्रीम कोर्ट तथा कांग्रेस लाइब्रेरी आदि प्रसिद्ध जगहों का दर्शन कर जिन्दगी की सबसे बड़ी उपलब्धि

हासिल की। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अप्रतिम भूमिका निभाने वाली हिंदी को राष्ट्रसंघ पर मान्यता और सम्मान मिलेगा ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। दिनांक 17 जुलाई, 2007 को अपराह्न जॉन एफ केनेडी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से मास्को (MOSCO) होकर 19 जुलाई, 2007 को सुबह 8 बजे इंडिगो (INDIGO) द्वारा अपनी असमी आई की जन्मभूमि और नील गगन को कदम रखते ही हम फूले नहीं समाया। इस प्रकार एक सबसे हसीन और यादगार पल का सुखद एहसास जिन्दगी एक सफर सुहाना के साथ समापन हुआ।

पूर्व अध्यक्ष एवं उपाचार्य, हिन्दी विभाग
पांडु कॉलेज, गुवाहाटी- 12, असम
फोन: 9954894595

संप्रति

अतिथि अध्यापक
हिंदी विभाग,
कन्या महाविद्यालय
गीतानगर, गुवाहाटी-21

शिक्षक दिवस विशेष

शिक्षक दिवस

शोभा कुमारी यादव

प्रतिवर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस के अवसर शिक्षकों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए भारत भर में शिक्षक दिवस 5 सितंबर को मनाया जाता है।

गुरू का हर किसी के जीवन मे बहुत महत्व होता है। समाज में भी उनका अपना एक विशिष्ट स्थान होता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन शिक्षा में बहुत विश्वास रखते थे वे एक महान दार्शनिक और शिक्षक थे। उन्हें अध्यापन से गहरा प्रेम था। एक आदर्श शिक्षक के सभी गुण उनमें विद्यमान थे। इस दिन

समस्त देश में भारत सरकार द्वारा श्रेष्ठ शिक्षकों को पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है।

इस दिन स्कूलों में पढ़ाई बंद रहती है। स्कूलों में उत्सव, धन्यवाद और स्मरण की गतिविधियां होती हैं, बच्चे व शिक्षक दोनों ही सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। स्कूल कॉलेज सहित अलग-अलग संस्थाओं में शिक्षक दिवस पर विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। छात्र विभिन्न तरह से अपने गुरुओं का सम्मान करते हैं, तो वहीं शिक्षक गुरू-शिष्य परंपरा को कायम रखने का संकल्प लेते हैं। स्कूल और कॉलेज में पूरे दिन उत्सव-सा माहौल रहता है। दिनभर रंगारंग कार्यक्रम और सम्मान का दौर चलता है। इस दिन डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को उनकी जयंती पर याद कर मनाया जाता है।

गुरू-शिष्य परंपरा भारत की संस्कृति का एक अहम और पवित्र हिस्सा है जिसके कई स्वर्णिम उदाहरण इतिहास में दर्ज हैं। शिक्षक उस माली के समान है तो एक बगीचे को अलना-अलग रूप-रंग के फूलों से सजता है। जो छात्रों को कांटों पर भी मुस्कुराकर चलने के लिए प्रेरित करता है। आज शिक्षा को हर घर तक पहुंचाने के लिए तमाम सरकारी प्रयास मिलना चाहिए

जिसके के वे हकदार है। एक गुरू ही शिष्य में अच्छे चरित्र का निर्माण करता है।

शिक्षा ही हमें हमारे भविष्य के मार्गों का रास्ता दिखाने का कार्य करता है। वह हमारी रूचि और कार्य को करने के लिए प्रेरित और उस विषय के लिए ज्ञान भी प्रदान करता है ताकि हम भविष्य में सफल हो सके। शिक्षकों का विद्यार्थी के जीवन में बहुत अधिक महत्व होता है। इसलिए शिक्षकों के सम्मान के लिए प्रतिवर्ष शिक्षक दिवस मनाते हैं ताकि हम शिक्षकों का सम्मान कर सकें। शिक्षक दिवस पर शिक्षकों के सम्मान के लिए उत्सव का आयोजन किया जाता है। जिस दिन शिक्षक के सम्मान विद्यार्थियों के द्वारा विभिन्न उत्सवों, कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं का आयोजित किया जाता है।

इन दिन कई स्थानों, घर, स्कूलों में शिक्षक जाकर अध्यापन कर आते हैं और विभिन्न नृत्य कार्यक्रमों, नाटकों तथा क्रीड़ा प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है और यह सभी कार्यक्रमों का आयोजन देखकर शिक्षकों को गर्व एवं बहुत आनंद महसूस होता है और इस आयोजन पर सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर उसके मनोबल को बढ़ाने का कार्य भी किया जाता है। क्रीड़ा प्रतियोगिता का भी आयोजन इस दिन किया

जाता है। इस दिन विभिन्न प्रकार कीं क्रियाओं को आयोजित किया जाता है और इस में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों को भी सम्मानित किया जाता है। डॉ. सर्वपल्ली राधा कृष्णन जी एक शिक्षक के साथ-साथ देश के पहले उपराष्ट्रपति थे एवं बाद में राष्ट्रपति भी बने थे। वह एक सरल एवं साधारण व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे और वे भारतीय संस्कृति एवं शास्त्र ज्ञाता भी थे। इन्होंने अपने जीवन के वर्ष शिक्षक बन कर बच्चों एवं युवाओं को शिक्षा दी तथा उनके भविष्य की सकारात्मक दिशा दी ताकि वह अपना भविष्य सुधार सके एवं देश का भी विकास कर सके। सभी छात्रों को व्यवस्थित रूप में एक शिक्षक ही शिक्षा प्रदान कर सकता है। शिक्षक हमारे अंदर की बुराईयों को दूर कर एक बेहतर इंसान बनाते हैं। हमारे जीवन में शिक्षकों के योगदान के लिए हमें शिक्षकों का हमेशा का आदर करना चाहिए।

कक्षा- उच्चतर माध्यमिक द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक- 105

****

शिक्षक दिवस

प्रिती कुमार राय

प्रस्तावना

5 सितंबर को भारत में शिक्षक दिवस घोषित किया गया रूप हैं। हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर 1888 को हुआ था। इसलिये अध्यापन पेशे के प्रति उनके प्यार और लगाव के कारण उनके जमदिन पर पुरे भारत में शिक्षक दिवस मानाया जाता हैं।

गुरु-शिष्य परंपरा भारत की संस्कृति का एक अहम और पवित्र हिस्सा है। जीवन में माता-पिता का स्थान कोई नहीं ले सकता क्योंकि वे ही हमें इस रंगीन तथा खुबसूरत दुनिया मे लाते हैं। कहा जाता है कि जीवन के सबसे पहले गुरु हमारे माता पिता होते हैं। भारत में प्राचीन समय से ही गुरु व शिक्षक परंपरा चली आ रही है। लेकिन जीने का असली तरीका हमें शिक्षक ही सिखाते है। सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं।

कब-क्यों मनाया जाता है

प्रतिवर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन कै जन्म -दिवस के अवसर पर शिक्षकों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए भारत भर में शिक्षक दिवस 5 सितंबर को मनाया जाता है। गुरु का हर किसी के जीवन मे बहुत महत्व होता है। समाज में भी उनका अपना एक विशिष्ट स्थान होता है। सर्वपल्ली राधाकृण्ण शिक्षा में बहुत विश्वास रखते थे। वे एक महान दार्शनिक और शिक्षक थे। उन्होंने अध्यापन से गहरा प्रेम था। एक आदर्श शिक्षक के सभी गुण उनमें विद्यमान थे। इस दिन समस्त देश में भारत सरकार द्वारा श्रेष्ठ शिक्षकों पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

तैयारियां

इस दिन स्कूलों में पढ़ाई बंद रहती है। विभिन्न गतिविधियां होती है। बच्चे शिक्षक दोनों ही सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। स्कूल कॉलेज सहित अलग-अलग संस्थाओं में शिक्षक गुरु-शिष्य परंपरा को कायम रखने का संकल्प लेते हैं। पूरे दिन उत्सव-सा माहौल रहता है। स्कूल और कॉलेज में दिनभर रंगारंग कार्यक्रम और सम्मान का दौर चलता है। इस दिन डॉ.. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को उनकी जयंती याद कर मनाया जाता हैं।

गुरु-शिष्य का संबंध

गुरु-शिष्य परंपरा भारत की संस्कृति का अहम और पवित्र हिस्सा है। जिसके कई स्वर्णिम उदाहरण इतिहास में दर्ज हैं। शिक्षक उस माली के समान है। जो एक बगीचे को अलग अलग रूप-रंग के फुलों से सजाता है। जो छात्रों को कांटों पर भी मुस्कुराकर चलने के लिए प्रेरित करता है। आज शिक्षा को हर घर तक पहुंचाने के लिए तमाम सरकारी प्रयास किए जा रहे हैं। शिक्षकों को भी वह सम्मान मिलना चाहिए। जिसके वे हकदार है। आज शिक्षा को हर घर तक पंहुंचाने के लिए तमाम सरकारी प्रयास किए जा रहे हैं। एक गुरु ही शिक्षण में अच्छे चरित्र का निर्माण करता हैं।

उपसंहार

आज तमाम शिक्षक अपने ज्ञान की बोली लगाते लगे हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष में देखें तो गुरु-शिष्य की परंपरा कहीं न कहीं कलंकित हो रही है। आए दिन शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों एवं विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों के साथ दुर्व्यवहार की खबरे सुनने को मिलती हैं। इसे देख कर हमारी संस्कृति की इस अमूल्य गुरु शिष्य परंपरा पर आंच नजर आने लगता है। विद्यार्थियों और शिक्षकों

दोनों का ही दायित्व है कि वे इस महान परंपरा को बेहतर ढंग से समझे और एक अच्छे समाज के निर्माण में अपना सहयोग प्रदान करें।

उच्चतर माध्यमिक द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक- 128

शिक्षक दिवस विशेष

शिक्षक दिवस

निशारून खातुन

हमारी सफलता के पीछे हमारे शिक्षक का हाथ में होता है। हमारे माता, पिता की तरह ही हमारे शिक्षक के पास ढेर सारी व्यक्तिगत समस्याएं होती है। लेकिन फिर भी वह इन सब को दरकिनार कर रोज स्कूल और कॉलेज आते हैं। तथा अपनी जिम्मेदारी का अच्छे से निर्वाह करते हैं। कोई भी उनके बेसकीमती कार्य के लिए उन्हें धन्यवाद नहीं देता इसलिये एक विद्यार्थी के रूप में शिक्षक के प्रति हमारी भी जिम्मेदारी बनती है कि कम से कम साल में एक बार उन्हें जरूर धन्यवाद दें।

हर वर्ष 5 सितंबर को हमारे निस्वार्थ शिक्षकों की उनके बहुमूल्य कार्य हेतु सम्मान देने के लिये शिक्षक दिवस मानाया जाता है। 5 सितंबर हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन है जिन्होंने पूरे भारत में शिक्षकों को सम्मान देने के लिए शिक्षक दिवस के रूप में उनके जन्मदिन को मनाने का आग्रह किया था। उन्हें अध्यापन पेशे से बहुत प्यार था। हमारे शिक्षक हमें शैक्षणिक दृष्टि से तो बेहतर बनाते ही है। साथ ही का हमारे ज्ञान, विश्वास स्तर को बढ़ाकर नैतिक रूप से भी हमें अच्छा बनाते हैं। जीवन में अच्छा करने के लिए वह हमें हर असंभव कार्य को संभव करने की प्रेरणा देते हैं। विद्यार्थियों के द्वारा इस दिन को बहुत उत्साह और खुशी के साथ मनाया जाता है। विद्यार्थी अपने शिक्षकों की अभिनंदन पत्र देकर बधाई देते हैं।

शिक्षक दिवस विशेष

माध्यमिक प्रथम वर्ष

शिक्षक दिवस

कोमल कुमारी ठाकुर

1) हमारे भारत देश में हर साल 5 सितंबर की शिक्षक दिवस मनाया जाता है।
2) इस दिन भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म दिवस होता है, जो एक महान विद्वान और आदर्श शिक्षक थे।
3) दुनिया के विभिन्न दोशों में अलग-अलग दिन शिक्षक दिवस मनाया जाता है।
4) भारत देश में 5 सितंबर, 1962 से शिक्षक दिवस मनाया जा रहा है।
5) शिक्षक दिवस के दिन शिक्षकों की सरकार द्वारा कुछ महान शिक्षकों को सम्मानित किया जाता है।
6) शिक्षक दिवस के दिन विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं और कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।
7) इस दिन विद्यार्थी अपने शिक्षक को गिफ्ट, ग्रेटींग कार्ड भेजकर, वीडिओ, ऑडिओ संदेश, ई-मेल आदि भेजकर शिक्षक दिवस की बधाई देते हैं।

8) शिक्षक हमें सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं देते बल्कि हमें अच्छा इंसान बनाने में मदद करते हैं।

उच्चतर माध्यमिक प्रथम वर्ष

शिक्षक दिवस विशेष

अनुक्रमांक: 30

शिक्षक दिवस (भाषण)

पूजा वर्मन

"शिक्षा से वड़ा कोई वरदान नहीं
गुरू का आशीर्वाद मिले
इससे बड़ा कोई सम्मान नहीं"

आदरणीय प्राचार्य महोदय, मंच पर आसीन समस्त शिक्षकगण, गण्यमान्य अतिथियों और मेरे प्यारे दोस्तों। मैं पूजा वर्मन आप सभी को शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं ज्ञापन करती हूं। आज इस अवसर पर अपने विचार रखना मेरे लिए वास्तव में सौभाग्य की बात है। जैसा कि हम भी जानते हैं, आज 5 सितम्बर को हम सभी यहां शिक्षक दिवस मनाने के लिए एकत्र हुए हैं, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्मदिन का स्मरण करते हुए जो एक महान शिक्षक, भारत के पहले उप-राष्ट्रपति और देश के दूसरे राष्ट्रपति थे। यह दिन छात्रों के द्वारा अपने शिक्षको

को उनके अविश्वसनीय समर्पन और मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद देने हेतु पूरे देश में मनाया जाता है।

ये सच है कि शिक्षक ज्ञान और बुध्दि का स्त्रोत होते हैं। वे हमारा मार्गदर्शन करते हैं ताकि हम अपने कौशल को विकसित कर सके। वे हमारी क्षमता का पता लगाने में हमारी सहायता करते हैं। हम उनके प्रयासों को नजरअंदाज नहीं कर सकते है। अतः मैं अपने भाषण के अंत में कहना चाहती हूं कि हमे शिक्षक का हमेशा सम्मान करना चाहिए और उनकी मेहनत की कद्र करनी चाहिए।

बहुत बहुत धन्यवाद।

शिक्षक दिवस विशेष

शिक्षक दिवस

पिंकी कुमारी

शिक्षक दिवस हम इसीलिए मनाते है, क्योंकि इसी शिक्षक दिवस के जरिए हमारे ही गुरु को धन्यवाद कहने का अवसर प्राप्त करते हैं। हमारे गुरु हमारे लिए, माता-पिता के जैसा ही है, क्योंकि घर में हमें शिक्षा माता-पिता देते हैं, और विद्यालय, कॉलेज में हमें शिक्षा प्रदान करने वाले हमारे आदरणीय गुरु (शिक्षक) है। हम माता-पिता को ईश्वर का दर्जा देते हैं वैसे ही हमारे गुरु भी समान रूप से ही ईश्वर ही होते हैं। वे हमारे लिए मेहनत करके हमें शिक्षा दान करते हैं ताकि उनकी छात्राएं आगे जा के मेहनती और सच्चाई के पथ चले और शिक्षा के जरिए बड़ा ईन्सान बने, बड़ी उपाधि लाभ करें और ये सब शिक्षक सिर्फ

और सिर्फ हम विद्यार्थीयों के लिए करते हैं, बिना किसी स्वार्थ के हमें अच्छे और इमानदारी के पथ पर चलने के लिए प्रेरणा देते हैं, शिक्षक दिवस के अवसर पर बस मैं यही बोलना चाहूंगी हमारे गुरु जी से धन्यवाद सर, मेम, हमें इतने अच्छे से पाठदान करने के लिए। हमारे माता-पिता के बाद आपलोग एवं हमारे गुरु ही हमारे लिए ईश्वर है। गुरु के बिना शिक्षा अपूर्ण है इसलिए शिक्षा है तो गुरु है और गुरु है तो शिक्षा। हम शिक्षक दिवस कहने से और एक व्यक्ति के बारे में जाना जाता है, वह डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णण। वे एक बहुत बड़ी विश्वविद्यालय के शिक्षक थे, और हमारे भारत के उपराष्ट्रपति और बाद राष्ट्रपति भी रह चुके हैं। शिक्षक दिवस के अवसर पर हम हमारे भारत के प्रेरणादायक गुरू डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णण को याद करते हैं और उन्हें ध्न्यवाद देते हैं।

उच्चतर माध्यमिक पहला वर्ष,
अनुक्रमांक- 22

हिंदी दिवस विशेष

हिंदी दिवस (निबंध)

खुशबू कुमारी पोद्दार

प्रस्तावना

हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। ऐसा इसलिए हैं क्योंकि इस दिन भारत की संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी भाषा को भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में घोषित था। भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर

1949 को भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को अपनाया। हालांकि इसे 26 जनवरी 1950 को देश के संविधान द्वारा आधिकारिक भाषा के रूप में इस्तेमाल करने के विचार को मंजूरी दी गई। हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में इस्तेमाल करने के दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

भारत के संविधान ने देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को 1950 के अनुच्छेद 343 के तहत देश की आधिकारिक भाषा के रूप 1950 में अपनाया। इसके साथ ही भारत सरकार के स्तर पर अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाएं औपचारिक रूप से इस्तेमाल हुई। 1949 में भारत की संविधान सभा ने देश की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को अपनाया। वर्ष 1949 से प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।

हिंदी दिवस का महत्व

हिंदी दिवस को उस दिन को याद करने के लिए मनाया जाता है जिस दिन हिंदी हमारे देश की आधिकारिक भाषा बन गई। यह हर साल हिंदी के महत्व पर जोर देने और हर पीढ़ी के बीच इसको बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है जो अंग्रेजी से प्रभावित है। यह युवाओं को अपनी जड़ों के बारे में याद दिलाने का एक तरीका है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कहां तक पहुंचे हैं और हम क्या करते हैं अगर हम अपनी जड़ों के साथ मैदान में डटे रहे और समन्वयित रहें तो हम अपनी पकड़ मज़बूत बना लेंगे।

यह दिन हर साल हमें हमारी असली पहचान की याद दिलाती है और देश के लोगों को एकजुट करता है। जहां भी हम जाएं हमारी भाषा-संस्कृति और मूल्य हमारे साथ बरकरार रहने चाहिए और ये एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करते है। हिंदी दिवस एक ऐसा दिन है जो हमें देशभक्ति भावना के लिए प्रेरित करता है। आज के समय में अग्रेंजी की ओर एक झुकाव है जिसे समझा जा सकता है क्योंकि अंग्रेंजी का इस्तेमाल दुनियाभर में किया जाता है और यह भी भारत की आधिकारिक भाषाओं में से एक है। यह दिन हमें यह याद दिलाने का एक छोटा सा प्रयास है कि हिंदी हमारी आधिकारिक भाषा है और बहुत अधिक महत्व रखता है।

जहां अंग्रेजी एक विश्वव्यापी भाषा है और इसके महत्व को अनदेखा नहीं किया जा सकता है वहीं हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम पहले भारतीय हैं और हमें हमारी राष्ट्रीय भाषा का सम्मान करना चाहिए। आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को अपनाने से साबित होता है कि सत्ता में रहने वाले लोग अपनी जड़ों को पहचानते हैं और चाहते हैं कि लोगों द्वारा हिंदी को भी महत्त्व दिया जाए।

उत्सव के रूप में हिंदी दिवस

स्कूलों, कॉलेजों और कार्यालयों में मनाया जाने हिंदी दिवस राष्ट्रीय स्तर पर भी मनाया जाता है जिसमें देश के राष्ट्रपति उन लोगों को पुरस्कार देते हैं जिन्होंने हिंदी भाषा से संबंधित किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल की है।

स्कूलों और कॉलेजों में प्रबंधन समिति हिंदी वाद-विवाद, कविता या कहानी बोलने की प्रतियोगिताएं आयोजित करती हैं और शिक्षक हिंदी भाषा के महत्व पर जोर देने के लिए भाषण भी देते हैं। कई इंटर स्कूल हिंदी वाद-विवाद और कविता प्रतियोगिताओं की मेजबानी करते हैं। इंटर-स्कूल हिंदी निबंध और कहानी लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती है। यह हिंदी भाषा को सम्मान देने का दिन है जो विशेषकर नई पीढ़ी के बीच अपना महत्व खो रही है।

यह दिन कार्यालयों और कई सरकारी संस्थानों में भी मनाया जाता है। भारतीय संस्कृति को आनंदित करने के लिए लोग भारतीय जातीय परिधान पहनते हैं। महिलाएं सूट और साड़ियां पहनती हैं और पुरुष इस दिन कुर्ता-पजामा पहनते हैं इस दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं और लोग उत्साह से उसमें भाग लेते हैं। बहुत से लोग हिंदी कविता पढ़ना और हमारी संस्कृति के महत्व के बारे में बात करते हैं। हिंदी-भारत में सबसे अधिक बोलने वाली भाषा है।

निष्कर्ष

निस्संदेह भारत में हिंदी सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली भाषा है। हालांकि अंग्रेजी के प्रति अभी भी भारतवासियों का झुकाव है और इसके महत्व पर स्कूलों और अन्य स्थानों पर जोर दिया जाता है परन्तु हिंदी हमारे देश की सबसे व्यापक रूप में बोली जाने वाली भाषा के रूप में आयोजित जनगणना में करोड़ो लोगों ने

अपनी मातृभाषा के रूप में हिंदी का उल्लेख किया। हिंदी बोलने वाली अधिकांश आबादी उत्तर भारत में है।

उच्चतर माध्यमिक द्वितीय वर्ष

अनुक्रमांक: 84

****

हिंदी दिवस विशेष

हिंदी दिवस

आरती कुमारी

भारत देश में हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। 14 सितंबर, 1949 में हिंदी भाषा की राजभाषा का दर्जा मिला। भारत में पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर, 1953 को मनाया गया। इस दिन का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा का प्रचार और प्रसार बढ़ाकर उसका विकास करना है। हिंदी विश्व की प्राचीन, समृद्ध राष्ट्रभाषा है।

हिंदी भाषा पूरे देश को एकता के सूत्र में बांधती है। इस दिन भारत के राष्ट्रपति द्वारा हिंदी संबंधित क्षेत्रो में बेहतर काम करनेवाले लोगों और संस्थाओं को पुरस्कृत किया जाता है।

इस दिन सरकारी विभागों, स्कूल, कॉलेज आदि में हिंदी संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। हमें अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी का सम्मान करके अपने देश को आत्मनिर्भर बनाना होगा।

आरती कुमारी

उच्चतर माध्यमिक प्रथम वर्ष

अनुक्रमांक: 53

****

कविता

फिलहाल तो कोशिश अभी जारी है

सोनी कुमारी

आंखों में कुछ ख्वाब लेकर,
भड़कर, आशाओं में उड़ान,
चला है, परिंदा आसमा की गहराई में
मत बांधो तुम मुझको इन रस्मों की
डोरी से, लड़ रही हूं मैं अपने ही,
समाज के बनाई लकीरों से

फिलहाल तो कोशिश अभी जारी है।

यही नहीं मिलते हैं मंजिल बस चाहने से,

डर रही हूं मैं अपने ही ख्वाव को

समाप्त को बताने से,

कभी खूद से तो कभी समाज के

बनाऐ नियमों से लड़ना पड़ता है।

तब जाके कहीं मंजिल की राह

दिखाई पड़ता है,

फिलहाल तो कोशिश अभी जारी है।

स्नातक पहला वर्ष

अनुक्रमांक: 46

****

अन्य

प्रदूषण

कामेश्वरी दे

प्रस्तावना: विज्ञान के इस युग में मानव को जहां कुछ वरदान मिले हैं, वहां कुछ अभिशाप भी मिले हैं। प्रदूषण एक ऐसा

अभिशाप हैं जो विज्ञान की कोष में से जन्मा हैं और जिसे सहने के लिए अधिकांश जनता मजबूर है।

प्रदूषण का अर्थ

प्रदूषण का अर्थ हैं- प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना। न शुद्ध वायु मिलना, न शुद्ध जल मिलना, न शुद्ध खाद्य मिलना, न शांत वातावरण मिलना। प्रदूषण कई प्रकार के होते हैं - वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि-प्रदूषण।

वायु-प्रदूषण

महानगरों में यह प्रदूषण अधिक फैला है। वहां चौबीसों घंटे कल-कारखानों का धुआं, मोटर वाहनों का काला धुआं, श्वास लेना दूभर हो गया है। मुंबई की महिलाएं धोए हुए वस्त्र छत से उतारने जाती हैं तो उन पर काले-काले कण जमे हुए पाती हैं। ये कण सांस के साथ मनुष्य के फेफड़ों में चले जाते हैं और असाध्य रोगों को जन्म देते हैं। यह समस्या वहां अधिक होती हैं, जहां सघन आबादी होती हैं, वृक्षों का अभाव होता है और वातावरण तंग होता है ।

जल-प्रदूषण

कल-कारखानों का दूषित जल नदी-नालों में मिलकर भयंकर जल-प्रदूषण पैदा करता है। बाढ़ के समय ती कारखाने का

दुर्गंधित जल सब नाली-नालों मे 'घुलकर मिल जाता है। इससे अनेक बीमारियां पैदा होती है।

ध्वनि प्रदुषण

मनुष्य को रहने के लिए शांत वातावरण चाहिए। परन्तु आजकल कल-कारखाने का शोर, यातायात का शोर, मोटर-गाड़ियों की आवाज, लाउड स्पीकरों की कर्णभेदक ध्वनि ने बहरेपन और तनाव को जन्म दिया है।

प्रदुषणों के दुष्परिणाम

उपर्युक्त प्रदुषणों के कारण मानव के स्वस्थ जीवन को खतरा पैदा हो गया है। खुली हवा में लंबी सांस लेने तक को तरस गया है आदमी। गंदे जल के कारण कई बीमारियां फसलों में चली जाती हैं जो मनुष्य के शरीर मे पहुंचकर घातक बीमारियां पैदा करती हैं। भोपाल गैस कारखाने से रिसी गैस के कारण हजारों लोग मर गए, कितने ही अपंग हो गए। पर्यावरण-प्रदूषण के कारण न समय पर वर्षा आती है, न सर्दी-गर्मी का चक्र ठीक चलता है। सुखा, बाढ़, ओले, आदि प्राकृतिक प्रकोपों का कारण भी प्रदूषण है।

प्रदुषण के कारण

प्रदूषण को बढ़ाने में कल- कारखाने, वैज्ञानिक साधनों का अधिक उपयोग, फ्रिज, कूलर, वातानुकूलन, ऊर्जा संयंत्र आदि दोषी हैं। प्राकृतिक संतुलन का बिगड़ना भी मुख्य कारण हैं। वृक्षों की अंधा-धुंध काटने से मौसम का चक्र बिगड़ा है। घनी आबादी वाले क्षेत्रों में हरियाली न होने से भी प्रदूषण बढ़ा है

सुधार के उपाय

विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों से बचने के लिए चाहिए कि अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाए, हरियाली की मात्रा अधिक हो। सड़कों के किनारे घने वृक्ष हो। आबादी वाले क्षेत्र खुले हों, हवादार हों, हरियाली से ओत:प्रोत हो। कल कारखानों को आबादी से दूर रखना चाहिए और उनसे निकले प्रदूषित मल को नष्ट करने के उपाय सोचना चाहिए।

स्नातक पहला वर्ष

अनुक्रमांक: 69

****

अन्य

शिक्षा

बिनिता कुमारी

शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो हमें सफलता की ओर अग्रसर करता है। शिक्षा ही संसार में हमें श्रेष्ठ बनाती है। सिर्फ किताबी ज्ञान ही शिक्षा नहीं होती।

अपितु हमारा मानसिक विकास भी सफलता के लिए आवश्यक है। सिर्फ कल्पना करने से हमें सफलता नहीं मिल सकती उन सफलताओं को पूरा करने के लिए हमें कड़े परिश्रम की आवश्यकता है। शिक्षा से ही आन बान शान होती है।

आपको प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षा पर कुछ अनमोल विचार-

* एक छात्र की सबसे महत्वपूर्ण गुण यह है कि वह हमेशा अपने अध्यापकों से सवाल पूछे।

* शिक्षा का उद्देश्य तथ्यों को सीखना नहीं होती है बल्कि शिक्षा का मुख्य दिमाग को प्रशिक्षित करना होती है।

* कड़ी मेहनत के लिए कोई विकल्प नहीं है।

*एक हज़ार मील सफलता की यात्रा की शुरूआत भी एक कहम से ही होती है।

*मुझे विश्वास है कि प्रति व्यक्ति एक प्रतिभा के साथ पैदा होता है बस हमें ज़रूरत होती है उस प्रतिभा को निखारने की। हमें हमेशा कुछ उपयोगी चीजों को जानने और सीखने की इच्छा रखनी चाहिए।

*हमने स्कूल में जो सीखा है वह सब भूलने के बाद जो याद रहता है, वही शिक्षा है। ज्ञान का निवेश सर्वोत्तम भुगतान करता है।

*ज्ञान ही शक्ति है। जानकारी स्वतंत्रता है। प्रत्येक परिवार और समाज में शिक्षा में प्रगति का आधार है।

*सीखने के लिए जुनून पैदा कीजिये, यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप कभी भी आगे बढ़ने से नहीं घबराएंगी

*शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं हैं, शिक्षा ही जीवन है।

उच्चतर माध्यमिक पहला वर्ष

अनुक्रमांक: 29

****

अन्य

धूम्रपान के खतरे

वरषा शर्मा

तम्बाकू जैसी जलती हुई चीज, जो अक्सर सिगरेट या बोढ़ी के रूप में होता है, उससे निकलने वाले धुएं को शरीर के अंदर लेने की प्रक्रिया धुम्रपान है। धूम्रपान के और भी रूप है जैसे पाइप, हुक्का आदि। तम्बाकू 16 वी शताब्दी में सबसे पहले यूरोप में दवाई के रूप में लाया गया था। कोलम्बस ने जब अमेरिका की खोज की तो उनकी मुलाकत वहां के कुछ नागरिकों से हुई। वो लोग एक लकड़ी के ट्यूब द्वारा एक खास प्रकार के पत्ते के धुएं को मुंह से खींचते थे। उस ट्यूब (नली) की टोबैको कहा जाता था।

यही से उस बौधे के पत्ते का नाम तौबकों पड़ गया। अमेरिका के लोग उस पत्ते को सुखाकर, मोड़कर तथा सुखाकर उसके धुएं को मुँह से खींचते थे। यही सिगार तथा सिगारेट का प्रारभिक रूप हैं। लगभग 100 सालों में यूरोप में इसका प्रचलन है। और फिर वही से धूम्रपान यह आदत जल्द ही पूरे विश्व में फैल गई। इस नशे की आदत के फैलने के मुख्य कारण माना जाता है- तम्बाकू में पाया जाने वाला निकोटिन नामक पदार्थ। 20 वीं सदी के मध्य में वैज्ञानिक ने यह पता लगाया कि तम्बाकू में पाया जाने वाला निकोटिन पदार्थ खासकर सिगरेट पीने से स्वास्थ पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे फेफड़े का कैंसर तथा और भी बिमारियां होती हैं। वैज्ञानिकों का कहना है की सिगरेट के धुएं का बुरा असर पीने वाले पर पड़ता ही है। उससे आसपास खड़े न पीने वाले लोगों पर भी पड़ता है।

सिगरेट बनाने वाली कम्पनियों ने तम्बाकू में पाए जाने वाले हानिकारक पदार्थ जैसे- टार तथा निकोटिन को हटाने का प्रयास किया और हल्के सिगरेट का निर्माण किया। विश्व ने विभिन्न देशों की तरह भारत में भी सिंगारेट के डिब्बों पर सरकार संबंधी चेतावनी छापने का आदेश दिया गया है। विश्व में धूम्रपान के कारण प्रतिमिनट छः व्यक्तियों की मौत हो रही है। यह संख्यां

अन्य कारणों जैसे सड़क दुर्घटना, एडस, शराब, ड्ग आदि से होने वाली मौत अगर जल्द ही धूम्रपान कही ज्यादा है। अगर जल्द ही धूम्रपान को रोकने लिए कड़े कदम नहीं उठाये गए तो यह और भी जानलेवा साबित हो सकती है। सिगरेट के प्रसार- प्रसार के रोकने के लिए सरकार को और भी कड़े कदम उठाना चाहिए।

कक्षा: स्नातक प्रथम वर्ष

अनुक्रमांक: 82

अन्य

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

प्रिया चौधरी

जब भी हम सुभाष चंद्र बोस का नाम सुनते है, तो सबसे पहले हमारे दिमाग में सुभाष चंद्र बोस का नारा -"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा' याद आता है। नेताजी के नाम से मशहूर सुभाष चंद्र बोस एक महान स्वतंत्रता सेनानी और सच्चे देशभक्त थे। उनका जन्म उड़ीसा के कटक शहर में 23 जनवरी को 1897 को हुआ। उनके पिता जानकीनाथ बोस अपने समय के प्रसिद्ध वकील थे और उनकी माता प्रभावती देवी एक घरेलू महिला थीं। सुभाष चंद्र बोस ने अपनी स्कूली शिक्षा उड़ीसा से की, वह एक मेधावी छात्र थे, जब मैदिक में थे तो उन्होंने परीक्षा में दूसरा स्थान हासिल किया था। सुभाष चंद्र बोस ने व 1918 मे कलकत्ता विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र में बीए ऑनर्स किया और बाद में वह आगे की पढाई के लिए सितंबर 1919 में इंग्लैंड में चले गए। वहां उन्हें सिविल सेवा के लिए चुना गया था, लेकिन वह इंग्लैंड रहकर ब्रिटिश सरकार की सेवा नहीं करना चाहते थे। सुभाष चंद्र ने 1921 मैं अपनी सिविल सेवा की नौकरी से इस्तीफा दे दिया और भारत लौट आए।

वह बचपन से ही स्वामी विवेकानंद और रामकृष्ण की शिक्षाओं से प्रभावित हुए और सुभाष चंद्र बोस ब्रिटिश शासन के खिलाफ खतंत्रता आंदोलन में भाग लेते रहे हैं। वह महात्मा गांधी

की कुछ नीतियों का सहयोग तो कुछ का विरोध भी करते थे। छोटी उम्र से ही सुभाष चंद्र बोस राष्ट्रवादी रहे, अंग्रेजों की भेदभाव नीति के खिलाफ वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी में शामिल ही गए। सुभाष चंद्र बोस महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में शामिल हुए। बोस एक क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी थे, उन्होंने अपने स्तर पर देश की सेवा के लिए आजाद हिंद सेना की स्थापना की। जिसके बाद वह कई क्रांतिकारी आंदोलनों में शामिल हुए और उन्हें 11 बार जेल जाना पड़ा। एकबार उन्हें बर्मा, म्यांमार की जेल भेज दिया गया जहां क्षय रोग हो गया। बाद में सुभाष चंद्र बोस को दो बार कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष चुना गया और उन्होंने पंडित जवाहर लाल नेहरू के साथ काम करना शुरू किया। दोनों का स्वतंत्रता के प्रति अधिक उग्रवादी और वामपंथी दृष्टिकीण था, जो गांधी और अन्य कांग्रेस नेताओं के साथ बीच के मतभेदों का कारण बन गया। विचारधाराओं में मतभेद के कारण, सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा दे दिया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस कांग्रेस के आंतरिक और विदेश नीति के खिलाफ थे। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान उनके स्वतंत्रता संग्राम के लिए उन्हें गिरफ्तार भी किया गया। कांग्रेस

छोड़ने के बाद वह देश से बाहर चले और ब्रिटिश सेना के खिलाफ अन्य देशों के साथ गठबंधन करने लगे।

उन्होंने जापानियों का समर्थन अर्जित किया और वह दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय राष्ट्रीय सेना बनाने में सफल हुए। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान पश्चिमी शक्तियों के खिलाफ विदेशों से भारतीय राष्ट्रीय सेना का नेतृत्व किया बाद में नेताजी आईएनए के कमांडर बने। ऐसा माना जाता है कि 18 अगस्त, 1945 की एक विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई थी। सुभाष चंद बोस ने अपनी अंतिम पल तक देश के स्वतंत्रता संग्राम के लिए अंग्रेजी के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

कक्षा: स्नातक पहला छमाही
अनुक्रमांक- 76

****

अन्य

किसानों का अवदान

जयमाली बसुमतारी

किसान भारत की आत्मा है। किसान जितना समृद्धशाली होगा भारत भी उतना ही सुखी और संपन्न देश बनेगा। आज का किसान पिछले बीस साल के किसान से अधिक समृद्धशाली और तकनीकी प्रगति कर चुका है। वह भी अन्य बड़े देशों के किसानों की ही तरह संपन्न होने जा रहा है। वह अब खेलों में भी नयी मशीनों का का उपयोग कर रहा है। आज हल की जगह ट्रैक्टर ले ली है। भारत में किसानों के महत्त्व को समझाते हुए प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने नारा लगाया 'जय जवान जय किसान'। आज हम यह खुलकर कह सकते है कि भारत में किसानों का भविष्य उज्वल है।

उच्चतर माध्यमिक प्रथम वर्ष

अनुक्रमांक: 34

****

अन्य

पर्यावरण

अंजलि कुमारी

पर्यावरण एक ऐसा शब्द है जिसे सुने तो मन प्रसन्न हो उठता है। पर आज कहीं यह गयाब हो रहा है। लोग सिर्फ अपने बारे मे सोच रहे हैं। कोई यह नहीं सोच रहा कि यह हमारे बीच नहीं रहेंगें तो हम कैसे जी पायेंगें। सब स्वार्थी हो रहे हैं बड़े- बड़े पेड़ काटकर बड़े- बड़े इमारत बना रहे हैं। उन्हें तो यह भी नहीं पता अगर हम अब पैड़ काट देंगें तो आने वाली पीढ़ी असुरक्षित हो जाएंगें। पर्यावरण एक ऐसा साधन है जिसमें लोग बिना किसी

साधन के खुली श्वास ले सकते हैं। पैड़ के छाव में बैठकर आराम कर सकते हैं। हम इन्हीं पेड़ के फल भी खा सकते हैं।

हम लोग इन्हीं पेड़ों के नीचे खेल-कूदते हूए बड़े हुए। गर्मी के समय ठंडी छाव से हमें राहत दिलाया। हम अभी भी पैड़ लगा सकते हैं। जो आगे अपनी हरियाली से हमें राहत देंगे। काश लोग अब भी समझकर पैड़ लगाकर हरियाली पर्यावरण को बचाये तो अच्छा होगा।

स्नातक पहला वर्ष

अनुक्रमांक: 32

****

फोटो गैलरी >>>>>>>>

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ. रीनारानी बरदलै, नकुलचंद्र दास, अब्दुल हन्नान अहमद जैसी दिवंगत आत्माओं को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करती हुई उपाध्यक्षा पंज शईकीया।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ. रीनारानी बरदलै, नकुलचंद्र दास, अब्दुल हन्नान अहमद जैसी दिवंगत आत्माओं को भावपर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करती हुई बिनिता गगै।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ. रीनारानी बरदलै, नकुलचंद्र दास, अब्दुल हन्नान अहमद

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ. रीनारानी बरदलै, नकुलचंद्र दास, अब्दुल हन्नान अहमद जैसी दिवंगत

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ. रीनारानी बरदलै, नकुलचंद्र दास, अब्दुल हन्नान अहमद जैसी दिवंगत आत्माओं को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पन करने के उपरांत डॉ. जाकिर हुसैन,

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ. रीनारानी बरदलै, नकुलचंद्र दास, अब्दुल हन्नान अहमद जैसी दिवंगत आत्माओं को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करती हुई डॉ. अनन्या रय।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ. रीनारानी बरदलै, नकुलचंद्र दास, अब्दुल हन्नान अहमद जैसी दिवंगत आत्माओं को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए डॉ. नवकांत शर्मा।

शिक्षक दिवस समारोह में स्वागत ग्रहण करते हुए डॉ. नवकांत शर्मा

शिक्षक दिवस समारोह में स्वागत ग्रहण करती हुई उपाध्यक्षा मंजू शईकीया।

शिक्षक दिवस समारोह में स्वागत ग्रहण करते हुए डॉ. नवकांत शर्मा

शिक्षक दिवस समारोह में उपस्थित छात्राओं, अतिथियों और अध्यापकों

शिक्षक दिवस समारोह में अपना भाषण प्रस्तुत करती हुई बिनिता गगै

शिक्षक दिवस समारोह में अपने विभाग की छात्रों के साथ अध्यापकगण

शिक्षक दिवस समारोह में अपने विभाग की छात्रों के साथ अध्यापकगण

चित्र सं. 2

शिक्षक दिवस समारोह में केक काटकर खुशी मनाती हुई विद्यार्थियों के के साथ उपाध्यक्षा मंज शईकीया और विभाग के अध्यापकगण।

शिक्षक दिवस के मौके पर काटे गये केक

शिक्षक दिवस समारोह में अपना भाषण प्रस्तुत करते हुए प्रो. रफिकुल हक

शिक्षक दिवस में उपस्थित प्यारी-प्यारी छात्राएं

शिक्षक दिवस समारोह में अपना भाषण प्रस्तुत करती हुई डॉ. अनन्या रय

भारत रत्न डॉ. भूपेन हाजारिका का जन्म दिवस पालन करने के उपरांत मंच पर मानजीत पाठक, डॉ. जाकिर हुसैन और प्रो. रफ़िकुल हक।

कन्या महाविद्यालय ने अपनी खोई हुई विभूतियों को किया याद

▲ पूर्वोदय संवाददाता

गुवाहाटी, 8 सितंबर। कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा शिक्षक दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर देश के द्वितीय राष्ट्रपति व महान शिक्षक-दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की तस्वीर के समक्ष दीप प्रज्वलित किया गया तथा उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की गई। इसके साथ महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्य स्व. डॉ. रीनारानी बरदलै, असमिया विभाग के विभागाध्यक्ष स्व. नकुलचंद्र दास और हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष स्व. अब्दुल हन्नान अहमद को भी इस पावन अवसर स्मरण करते हुए उनके चित्रों पर माल्यार्पन किया गया।

इस कार्यक्रम में कन्या महाविद्यालय की उपाध्यक्ष मंजुरानी सइकिया, पांडु कॉलेज के सेवानिवृत्त उपाध्यक्ष प्रो. रफिकुल हक, असमिया विभाग की सहायक अध्यापिका बिनीता गोगोई, बांग्ला विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अनन्या राय और दर्शन विभाग की सहायक अध्यापिका शिखा शर्मा ने भी भाग लिया।

इस उपलक्ष्य पर विद्यार्थियों की ओर से स्नातक प्रथम वर्ष की छात्रा सोनी कुमारी ने कविता पाठ किया, जबकि ग्यारहवीं कक्षा की छात्रा बिनीता कुमारी ने बिहू नृत्य कर सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम के संचालन में प्रियंका सिंह और शोभा कुमारी यादव ने अग्रणी भूमिका निभाई। कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जाकिर हुसैन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

कन्या महाविद्यालय में डॉ. भूपेन हजारिका का जन्मदिन मनाया गया

▲ पूर्वोदय संवाददाता

गुवाहाटी, 9 सितंबर। गीतानगर स्थित कन्या महाविद्यालय में भारत रत्न डॉ. भूपेन हजारिका का 96वां जन्म दिवस धूमधाम से मनाया गया। यह आयोजन डॉ. जाकिर हुसैन की कोशिश से तथा कन्या महाविद्यालय के शिक्षक संघ, सांस्कृतिक सेल और आभ्यंतरीण गुण निर्णायक सेल के तत्वावधान में किया गया। इस अवसर पर सुधाकंठ डॉ. भूपेन हजारिका के गीत गाकर उनका जन्म दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में रेखामणि कलिता (विभागाध्यक्ष, दर्शन विभाग) ने शारदीय रानी शीर्षक गीत, दिपशीखा हजारिका (अर्थशास्त्र विभाग) ने 'जंगली दुनियाई कर' शीर्षक गीत, योतिका मेधी ने सागर संगम शीर्षक गीत, नीतांजलि वैश्य ने शारदीय रानी

शीर्षक गीत, अतिथि अध्यापक प्रो. रफिकुल हक ने मानुहे मानुहर बाबे शीर्षक गीत, डॉ. अनन्या राय और शिखा शर्मा ने संयुक्त रूप में एक गीत और हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. जाकिर हुसैन ने शंकरे सिंचे नामर कटिया शीर्षक गीत गाकर उपस्थित अतिथियों का मन मोह लिया। इसके अतिरिक्त असमिया विभाग की सहायक अध्यापिका बिनीता गोगोई ने भारत भूपेन हाजारिका रचित एक कविता का पाठ किया। इस आयोजन को डॉ. नमिता बर्मन, रूपामणि तालुकदार, प्लाविता राय, गुप्तजीत पाठक, मृस्मिता भुयां तथा महाविद्यालय की सभी छात्राएं उपस्थित रहकर सफल बनाया।